Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24 website- www.dvpnews.in रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 283 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, गुरुवार 09 मई 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

भूल करना मनुष्य का स्वभाव है पर अपनी भूल को मानना महापुरुष का काम है।

To err is a nuture of man, but to accept his err is the work of great man.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

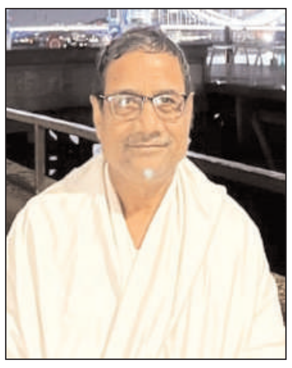

स्तब्ध हैं...
निःशब्द हैं...
प्रवीण जी,
शत्-शत् नमन्...

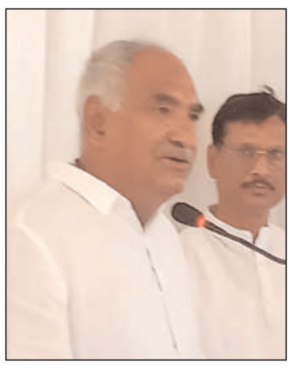

करगुवां जी में हुई श्रद्धांजलि सभा, प्रवीण जैन (सम्पादक) को श्रद्धांजलि देने उमड़ा जन समूह

झाँसी (विश्व परिवार)। आध्यात्मिकता, सम्यक सोच, संस्कारों से ओत-प्रोत, संतुलित जीवन, लेखनी के धनी और हर समय समाज के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा रखने वाले दैनिक विश्व परिवार के संपादक स्वर्गीय श्री प्रवीण कुमार जैन को आज वृहद स्तर पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

राजनीतिक, समाजसेवा, सामाजिक संस्थाओं, धार्मिक संस्थाओं आदि क्षेत्रों के तमाम दिग्गजों ने स्वर्गीय श्री प्रवीण जैन को श्रद्धांजलि देते हुए वर्तमान समय में उन्हें न केवल समाजसेवा के क्षेत्र का, बल्कि पत्रकारिता के क्षेत्र का एक ऐसा अध्याय व अनुपम व्यक्तित्व निरूपित किया, जिसका कोई विकल्प कभी नहीं हो सकता।

अतिशय जैन तीर्थ सांवलिया पार्श्वनाथ करगुवां जी में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने स्वर्गीय श्री प्रवीण कुमार जैन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वर्गीय श्री प्रवीण कुमार जैन ने असमय विदाई लेकर न केवल संपूर्ण समाज को, बल्कि रचनात्मक दृष्टिकोण को भी वियोग में अकेला छोड़ दिया।

स्वर्गीय श्री प्रवीण जैन का जाना एक ऐसी क्षति है, जिसे कभी भी भरा नहीं जा सकता। वक्ताओं ने कहा कि आज लगभग सभी स्तब्ध है, निशब्द हैं । सभी के मन भारी हैं। आंखें नम हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि सारे लोग शरीर से मौजूद हैं, लेकिन आत्मा की आंखों से अभी भी आंसू निकल रहे हैं । झांसी ही नहीं, जिला ही नहीं, बुंदेलखंड ही नहीं, बल्कि संपूर्ण देश के विभिन्न हिस्सों से श्रद्धांजलि सभा में शामिल होने आए लोगों ने श्री प्रवीण जैन को एक ऐसा व्यक्तित्व निरूपित किया, जिसका कभी कोई विकल्प नहीं हो सकता।

स्वर्गीय श्री प्रवीण के कार्यकलापों, दिनचर्या, आध्यात्मिकता, दूरदर्शिता, रचनात्मक दृष्टिकोण, रचनात्मक पत्रकारिता सहित समाज के लिए किए गए योगदान को याद करते हुए वक्ताओं ने कहा कि युगों में एक ऐसा मील का पत्थर स्थापित होता है, जिसके लिए युगों-युगों तक तपस्या करनी पड़ती है। हम सभी का यह दुर्भाग्य है कि आज यह मील का पत्थर किनारा कर गया है।

श्रद्धांजलि सभा में झांसी सहित बुंदेलखंड एवं विभिन्न शहरो से पधारे सैकडो लोगों ने नम आंखों से स्वर्गीय श्री प्रवीण कुमार जैन के चित्र के समक्ष अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

इस दौरान पूर्व लोकसभा प्रत्याशी श्रीमती अनुराधा शर्मा, पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य, पूर्व विधायक बृजेंद्र कुमार व्यास, विधान परिषद सदस्य रामतीर्थ सिंघल, प्रतिष्ठाचार्य जय निशांत जी, ब्र. मनीष जी, डा, पी के जैन, अनिल अंचल ललितपुर, राजेंद्र जैन टी आई भोपाल, प्रकाश चंद्र जैन, अजीत जैन, पवन जैन घुवारा, विवेक बंसल संचालक पीताम्बरा बुक्स, राजेंद्र जैन भागो, श्रेयांस ककरवाहा, भूपेंद्र जैन ललितपुर उत्पादक सहकारी संघ के अध्यक्ष प्रदीप सरावगी, वरिष्ठ भाजपा नेता संजीव श्रृंगीऋषि, अतुल जैन राजेश जैन अहमदाबाद, आम आदमी पार्टी की प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती अर्चना गुप्ता, महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर नरेंद्र सिंह सेंगर, डॉ. पीके जैन, डॉ. एके जैन, डॉ. संजय त्रिपाठी, दैनिक जागरण के संपादक सुरेंद्र सिंह, व्यापारी नेता अशोक जैन, ललित जैन, मुंबई से आए सुप्रसिद्ध गजल गायक जसवंत सिंह, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता राजेंद्र सिंह यादव, अरूण बंसल अनिल बट्टा, बलवान सिंह यादव, सुधा दीदी विदिशा, सरोज जैन, हरबंस लाल, वी के जैन, राजीव जैन सिर्स मदन बबेले, बृजेश जैन बडौदा, राजेन्द्र जैन एसएचओ दिल्ली पुलिस आदि ने संबोधित किया।

वरिष्ठ पत्रकार शैलेन्द्र जैन, रिपु सूदन नामदेव, बुंदेलखंड प्रेस वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष शीतल तिवारी, रविंद्र सिंह गौर, निलय जैन, राजेश चौरसिया, फ़ारुख खान, पंजाब केसरी के शहजाद खान, संयुक्त मीडिया क्लब के जिला अध्यक्ष हेमंत गुप्ता, सुभाष जैन, अशोक जैन, शिरोमणी जैन, के के गुप्ता, सुखदेव ब्यास, ओंकार सिंह, रंजना विद्रोही, प्रगति शर्मा, दीपशिखा आदि सैकंडों लोग मौजूद रहे।

सभा की अध्यक्षता श्री शैलेन्द्र जैन अध्यक्ष उत्तरांचल तीर्थ कमेटी अलीगढ ने की।

इस दौरान स्वर्गीय श्री प्रवीण कुमार जैन की पूज्यनीय मां श्रीमती देवी जैन, धर्मपत्नी डॉ. राखी जैन, उनके बड़े भाई तथा प्रेस काउंसिल आफ इंडिया के सदस्य प्रदीप कुमार जैन, छोटे भाई आलोक जैन, उनके दोनों पुत्र डॉ यश जैन, अतिशय जैन, दैनिक विश्व परिवार के समाचार संपादक डॉ. जिनेंद्र कुमार जैन, अमित जैन, डॉ. जयेश जैन, प्रियेश प्रसंग अरनब आदि सहित परिवरी सगे संबंधी जन नम आंखों के साथ मौजूद रहे। बाद में शोकाकुल परिवार ने मंदिर जी मे देव दर्शन किए शांतिपाठ का वाचन किया। संचालन श्री संजय कर्नल एवं श्री राजेश जैन ने किया।

इस दौरान जैन समाज के पदाधिकारियों एवं वरिष्ठ जनों द्वारा शोकाकुल परिवारजनों को सफेद टोपी व दुपट्टा ओढ़ाया। श्रद्धांजलि सभा में देश भर के विभिन्न जैन समाज के संगठनों द्वारा श्री प्रवीण जैन को अर्पित की गयी श्रद्धांजलि से संबंधित प्रेषित पत्र भी पढ़े गए।

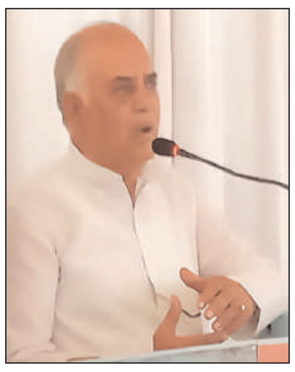

स्ट्रांग रूम को किया गया सील, 4 जून को होगी मतगणना

स्ट्रांग रूम की कड़ी सुरक्षा के लिए सुरक्षा बल तैनात, एसएसबी के निगरानी में रहेगा पूरा परिसर

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जिले में लोकसभा मतदान के पश्चात सभी मतपेटियों के आने के बाद रायपुर लोकसभा अंर्तगत बलौदाबाजार भाटापारा सामान्य प्रेक्षक संजय कुमार एवं जांजगीर चांपा लोकसभा क्षेत्र सामान्य प्रेक्षक के कसडोल विधानसभा प्रतिनिधी रमाकांत दुबे सभी सहायक रिटर्निंग अधिकारी और सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में जिला मुख्यालय स्थित नवीन मंडी में स्ट्रांग रूम को सील किया गया। स्ट्रांग रूम की कड़ी सुरक्षा के लिए सुरक्षा बल तैनात हैं। सभी विधानसभा क्षेत्र के दरवाजे पर सुरक्षा के जवान तैनात हो गए हैं। स्ट्रांग रूम में विधानसभावार 3 विधानसभा, कसडोल, बलौदाबाजार एवं भाटापारा के हिसाब से अलग-अलग ईवीएम एवं वीवीपैट रखी गई हैं। प्रशासन द्वारा स्ट्रांग रूम को सीसीटीवी की निगरानी में रखा गया है। जिसके लिए मॉनिटरिंग कक्ष बनाया गया है। पूरा परिसर को सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के हवाले कर दिया है। इस दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी आर आर दुबे, सभी सहायक रिटर्निंग अधिकारी सहित समस्त लोकसभा क्षेत्र के प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

पूर्व विधायक प. बंशराज तिवारी की स्मृति में नि:शुल्क रोग निदान शिविर का हुआ सफल आयोजन

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जिला बलौदाबाजार भाटापारा के एकमात्र सुपर स्पेशलिटी चंदा देवी तिवारी हॉस्पिटल में अस्पताल के संस्थापक अधिवक्ता समाजसेवी कद्दावर नेता पूर्व विधायक स्व. प. बंशराज तिवारी जी की 99 वीं जन्मजयंती पर आयोजित 18वें रोग निदान शिविर का सफल आयोजन चंदा देवी तिवारी हॉस्पिटल सिटी कोतवाली के सामने बलौदाबाजार में हुआ जिसमें सैकड़ों मरीजों ने अपना उपचार कराया एवं स्वास्थ्य शिविर का लाभ उठाया हॉस्पिटल के संचालक डॉ नितिन तिवारी ने बताया की बाबा जी की स्मृति में शिविर का आयोजन मेरे पिता डॉ प्रमोद तिवारी जी के द्वारा 2007 में प्रारम्भ किया गया था जिसे आज वृहत स्तर पर हमारे परिवार के द्वारा प्रतिवर्ष 6 मई को किया जाता है। आज जिसमें स्त्रीरोग उदर रोग नेत्ररोग अस्थिरोग शिशुरोग दंत रोग कैंसर रोग समेत सामान्य रोगों की जाँच विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा की गई जिसमें कुल 360 मरीजों की सामान्य जाँच एवं आवश्यकता पड़ने पर 55 मरीजों का खून पेशाब जाँच, 34 मरीजों का एक्स रे,58 मरीजों की सोनोग्राफी, 10 मरीजों का ई सी जी नि:शुल्क किया गया एवं सभी मरीजों को नि:शुल्क दवा का वितरण किया गया हर्निया के 7 एवं हाइड्रोसील के 12 मरीजों का पंजीयन एवं खून जाँच करके 7 तारीख मतदान करने के बाद उन्हें 8 तारीख को सर्जरी के लिए बुलाया गया है डॉ. गीतिकशंकर तिवारी ने कहा की इस शिविर का उद्देश्य उन मरीजों का उपचार करना है जो किसी कारणवश या पैसों की कमी से उपचार से वंचित रह जाते हैं वर्ष में एक दिन ऐसे मरीजों को शिविर के माध्यम से हम इलाज उपलब्ध कराने का एक छोटा सा प्रयास कर रहे हैं डॉ प्रमोद तिवारी ने शिविर में आए सभी सम्माननीय नागरिकों, जरूरतमंदों एवं उपचार कर रहे विशेषज्ञ चिकित्सकों का आभार व्यक्त किया एवं आने वाले वर्षों में शिविर में और भी अन्य तरह की जाँच एवं अन्य बिमारियों के विशेषज्ञ चिकित्सकों से उपचार की सुविधा बढ़ाने की बात कही। शिविर का आयोजन देवी देवताओं एवं स्व.प. बंशराज तिवारी एवं उनकी धर्मपत्नी स्व. चंदादेवी तिवारी जी के चित्र का माल्यार्पण एवं आरती कर किया गया जिसमें चेंबर ऑफ़ कामर्स के अध्यक्ष जुगल भट्टर, सेवानिवृत प्राचार्य एसएम पाधेय, योगेश शुक्ला स्व.प. बंशराज तिवारी के पुत्र अशोक कुमार, डॉ प्रमोद, विनोद, विपिन पौत्र अभिषेक, डॉ नितिन, पुत्रवधु डॉ गीतिकशंकर, प्रपौत्र अचिन्त्य, धरुन, निवेद, कु. नितिका उपस्थित रहे। चिकित्सक डॉ नरेंद्र कर्ष, डॉ राहुल देव, डॉ ऋतिक रायजादा, डॉ आकांक्षा, रावेन्द्र शर्मा, मुकेश जैन, संजय पांडेय, दीपक बांधे, हरपाल बंजारे, बसंत वर्मा, खिलावन फेकर, महेंद्र कोतरे समेत सभी अस्पताल कर्मचारियों ने अपनी सेवाएं दीं।

बस स्टैंड स्थित सुलभ शौचालय जाने वाले मार्ग को बना दिया दुकान

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। नगर के बस स्टैंड स्थित नगर पालिका कॉन्प्लेक्स में अभी-अभी बनी एक दुकान जो कि पंजाब नेशनल बैंक ग्राहक सेवा केंद्र के बाजू में है इन दिनों नगर में चर्चा का विषय बना हुआ है। लोगों का कहना है कि दुकान के लिए नगर पालिका द्वारा टेंडर निकाला जाना चाहिए था। लेकिन नहीं निकाला गया। लोग इस नवनिर्मित दुकान के बारे में तरह तरह की चर्चाएं कर रहे हैं। स्थानीय बस स्टैंड में बने सुलभ शौचालय जाने वाले रास्ते को बंद कर दुकान बना दिया गया है। जिससे कांप्लेक्स मे बनी दुकानों के व्यवसाईयीं को मूत्र त्याग के लिए काफी मुश्किलों को सामना पड़ रहा है। पालिकाध्यक्ष धनराज मध्यानी ने हमारे संवाददाता को इस बारे में चर्चा के आधार पर बताया कि इस परिसर में सुलभ शौचालय जाने वाले मार्ग में नशेड़ियों का अड्डा बन गया था जिसकी शिकायत आसपास के लोगों ने की थी। हमने पीआईसी की बैठक निर्णय लेते हुए उक्त दुकान बनाने की अनुमति दी थी।

भाजपा नेता किशोर देवांगन ने सह परिवार किया मतदान

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। गोबरा नवापारा नगर के वरिष्ठ भाजपा नेता किशोर देवांगन ने लोकतंत्र को सशक्त और स्थायी सरकार बनाने सह परिवार अपने मतों का प्रयोग किया।

चिलचिलाती गर्मी को मात देने के लिये कलाकारों का फिटनेस रूटीन!

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत में चिलचिलाती गर्मी का मौसम आ चुका है। ऐसे में फिटनेस के लिये वर्कआउट सही और असरदार होना चाहिये। एण्डटीवी के कलाकार अपने फिटनेस रुटीन के बारे में बताते हुए इस बात पर जोर दे रहे हैं कि तपती गर्मी के बीच फिट रहना क्यों जरूरी है। इन कलाकारों में शामिल हैं- आशुतोष कुलकर्णी (कृष्ण बिहारी वाजपेयी, 'अटल'), गीतांजलि मिश्रा (राजेश, 'हप्पू की उलटन पलटन') और शुभांगी अत्रे (अंगूरी भाबी, 'भाबीजी घर पर हैं')।'अटल' के कृष्ण बिहारी वाजपेयी, ऊर्फ आशुतोष कुलकर्णी ने बताया, ''मैं फिटनेस को लेकर कभी समझौता नहीं करता हूँ। ज्यादा गर्मी से बचने के लिये कई लोग इनडोर रहना पसंद करते हैं, लेकिन मैं सुनिश्चित करता हूँ कि इससे मेरी नियमित कसरत में कोई बाधा न आये। मैं उन कसरतों को जारी रखता हूँ, जो मुझे आमतौर पर करनी होती है और हाइड्रेट रहना मेरे लिये सबसे ज्यादा मायने रखता है। मैं सेहतमंद और ताजगी देने वाले ड्रिंक पर भरोसा करता हूँ, जैसे कि नींबू पानी, ककड़ी पुदीना और ताजे फलों का रस, ताकि मेरा शरीर हाइड्रेटेड रहे। मेरी कसरतों में ताकत के लिये शारीरिक व्यायाम शामिल है जैसे कि लंजेस, पुश-अप्स और स्क्वाट्स। यह स्थायी है, और इससे मुझे अपना मेटाबोलिज़्म बनाये रखने में मदद मिलती है। गर्मी को अपनी फिटनेस के आड़े मत आने दीजिये।''

'हप्पू की उलटन पलटन' की राजेश, ऊर्फ गीतांजलि मिश्रा ने बताया, ''गर्मियों का वक्त फिटनेस से जी चुराने का बहाना नहीं बनना चाहिये। लोग अक्सर गर्मी के नाम पर कसरत करना छोड़ देते हैं या ऐसे ड्रिंक पीते हैं, जिनमें सेहत को नुकसान पहुँचाने वाली बहुत ज्यादा शुगर होती है। गर्मियों में सक्रिय रहने में चुनौती हो सकती है, लेकिन अपने रुटीन में थोड़े बदलाव करके आप फिट रह सकते हैं। आप गर्मी की चिंता किये बिना सही कसरत कर सकते हैं। मेरा दिन योग से शुरू होता है और शाम को मैं समुद्र के किनारे जॉगिंग करती हूँ। फ्लोर एक्सरसाइज के लिये मेरे घर में डंबल्स भी हैं। गर्मी में हाइड्रेशन सबसे ज्यादा जरूरी है। इसके लिये आप पानी या इलेक्ट्रोलाइट से भरपूर पेय ले सकते हैं। गर्मियों के दौरान मैं लगभग रोजाना ताजे फलों का रस पीती हूँ। कभी-कभी माँ के हाथ का बना आम पना भी मुझे बहुत पसंद आता है।''

'भाबीजी घर पर हैं' की अंगूरी भाबी, ऊर्फ शुभांगी अत्रे ने बताया, ''मैं अपने रोजाना को वर्कआउट रुटिन से कभी समझौता नहीं करती हूँ। अगर शूटिंग जल्दी हो, तब भी मैं अपने दिन की शुरूआत एक घंटे के योग से करती हूँ। मुझे पारंपरिक योग पसंद है, लेकिन लचीलेपन के लिये मैं साप्ताहिक आधार पर पाइलेट्स और कभी-कभी जुम्बा भी करती हूँ। गर्मी को हराने के लिये मैंने अपने फिटनेस रुटीन में स्विमिंग को भी शामिल किया है। खाने-पीने के मामले में मुझे एक जैसे मील प्लान के बजाए एक्टिव लाइफस्टाइल पसंद है। यह मुझे सक्रिय रखती है। मैं खासकर गर्मियों में हल्का-फुल्का खाना पसंद करती हूँ। मैं घर के बने कई तरह के सेहतमंद जूस से खुद को हाइड्रेटेड भी रखती हूँ।'' अपने चहेते कलाकारों को देखिये 'अटल' में रात 8 बजे, 'हप्पू की उलटन पलटन' में रात 10:00 बजे और 'भाबीजी घर पर हैं' में रात 10:30 बजे, हर सोमवार से शुक्रवार सिर्फ एण्डटीवी पर!

नवापारा मे लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न, मतदाताओं में दिखा गजब का उत्साह

23 मतदान केन्द्रो में कुल 23000 मतदाताओ ने किया मतदान

गर्मी के बावजूद छाँव, पानी व बैठने की समुचित व्यवस्था से मतदाता हुए खुश

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। अभनपुर विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत जिले के अंतिम छोर में बसें गोबरा नवापारा शहर नगर पालिका क्षेत्र में लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ. जिसके लिए प्रसाशन द्वारा लगभग सारी जरुरी तैयारी पूरी कर लीं गई थी. नवापारा शहर में लोकसभा चुनाव के अंतर्गत कुल 9 जगहों में 23 मतदान केंद्र की व्यवस्था की गई थी, जिसमे महिला पुरुष मिलाकर कुल 22931 मतदाता मतदाताओ ने मतदान किया. इस लोकसभा चुनाव में रायपुर लोकसभा से इस बार 28 प्रत्याशी मतदान पर थे.जिसकी वजह से इस बार 3 एवीएएम मशीने यहाँ पर लगाई गई थी. मतदान को लेकर खासा उत्साह आदर्श मतदान केंद्र शासकीय आदर्श हरिहर उच्च माध्यमिक विद्यालय नवापारा में देखने को मिली जहाँ लोग अलसुबह से देर शाम तक मतदान करने पहुंचे. यहाँ बूथ क्र 220 में सुबह से ही मतदाताओ की भारी भीड़ रही. तीन तीन वार्ड होने के चलते यहाँ के लोगो को हर चुनाव में काफ़ी दिक्क़ते होती हैं. जिसे लेकर उन्होंने आगामी चुनाव में इसमें बदलाव करने की बात भी कहीं. इस आदर्श मतदान केंद्र में सेल्फी पॉइंट की व्यवस्था भी की गई थी, जिसमे हरेक शख्श ने ऊँगली लगी स्याही के साथ सेल्फी लेकर शोशल मिडिया में अपलोड किया. युवाओ में इसका ज्यादा प्रचलन देखने को मिला. पहली बार मत का प्रयोग कर रहे हेमलता, आसमा कौशर, दीपाली सोनी, रौनक सोनी, प्रेरणा साहू, मोनिका साहू, कविता साहू व अन्य युवाओ ने विकास और वोट अपना कर्तव्य को लेकर वोट किया. इस मतदान केंद्र स्थानीय प्रशासन के कर्मचारीगण असहाय, बुजुर्ग, कमजोर व दिव्यांगों की सेवा के लिए पुरे चुनाव तक लगे हुए थे लिहाजा आसानी से ये सभी लोग भी मतदान कर सके. वार्ड क्र -9 निवासी दिव्यांग विक्रांत सिंह राजपूत ने भी मतदान केंद्र पहुंचकर मतदान किया तों 94 वर्षीय लक्ष्णी निषाद ने भी मतदान केंद्र पहुँचकर मतदान किया. उक्त मतदान केंद्र में नवापारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉ. तेजेंद्र साहू ने भी सपरिवार सहित जाकर मतदान किया. यह आदर्श मतदान केंद्र पिंक बूथ था जहाँ के सभी मतदान कर्मी महिला थे. वही भीषण गर्मी के बीच में हो रहे इस लोकसभा चुनाव में पानी सहित छाँव की भी समुचित व्यवस्था स्थानीय प्रशासन द्वारा की गई हैं. साथ ही नगर के विभिन्न सामाजिक संघठनो द्वारा शीतल पेय जल व शरबत की व्यवस्था की गई थी.जिसे लाभार्थी लोगो ने खूब सराहा. उक्त आयोजन को सफल बनाने में स्थानीय प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, पुलिस प्रशासन, मितानिन, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता, पालिका कर्मचारियों का सराहनीय योगदान रहा.

स्थानीय पूर्व पालिका अध्यक्ष विजय गोयल ने 7 बजकर 1 मिनट में वोट डालकर नवापारा शहर में वोट डालने वाले प्रथम नागरिक बने.उन्होंने खोलीपारा स्थित शासकीय प्राथमिक स्कूल बूथ क्र -220 पहुंचकर अपने मत का प्रयोग किया. साथ ही उन्होंने लोगो में मतदान के प्रति रुझान को देखते हुए यह दावा किया कि इस बार बृजमोहन अग्रवाल जी रिकॉर्ड तोड़ मतों से विजयी होने का दावा किया. उन्होंने कहाकि उन्होंने यह वोट विकसित भारत बनाने के लिए और अपने प्रिय नेता के समर्थन के लिए डाला हैं.

न्यायालय तहसीलदार भिलाई-3
मामले की श्रेणी : राजस्व
संदर्भ :- जिला- दुर्ग, तहसील- भिलाई-3, प.ह.न.-00004, भिलाई-3 ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक- RD202324430300200021
ईश्तहार
तहसील भिलाई-3 के प.ह.न. 00004 के अंतर्गत ग्राम भिलाई-3 के वर्तमान भूमिस्वामी समई पिता/पति- पि. कालू, पता- खुर्सीपार के द्वारा धारित भूमि खसरा क्रमांक 89/18(0.0160) में प्रस्तावित भूमिस्वामी/क्रेता सुमारी बाई पिता/पति- स्व. समई, पता- गुजरा, जिला- दुर्ग (छ.ग.), शकुन्तला पिता/पति- स्व. समई पता- गुजरा, जिला- दुर्ग (छ.ग.), सन्तोष कुमार पिता/पति- स्व. समई पता- गुजरा, जिला- दुर्ग (छ.ग.), के नाम पर पंजीयन/फौती होने के उपरांत नामांतरण/ अभिलेख दुरुस्ती/ खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक 13/05/2024 को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय न्यायालय तहसीलदार भिलाई-3 पर की जावेगी।
उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं/ अधिवक्त/ आममुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते हैं। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।
यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 19/04/2024 को जारी किया जाता है।
मुहर
तहसीलदार
ख्याति नेताम
पाटन, जिला- भिलाई-3

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com
आम-सूचना
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा वीर सावरकर नगर हीरापुर कॉलोनी, रायपुर में निर्मित CH भवन योजना के अंतर्गत, दुकानों/भूखण्डों/भवनों में से भूखण्ड/भवन क्रमांक CH-110 श्री निशांत कुमार पिता वृजानन्द सिंह को भाड़ाक्रय/ पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक 10.07.2015 को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।
आबंटी उक्त भवन के दान हेतु दिनांक 01.05.2024 को निष्पादित दान इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन श्रीमती निर्मला देवी पति श्री वृजानन्द सिंह के नाम से दान करने के लिए दान अनुमति की मांग की है।
अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।
सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com
आम-सूचना
सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा शंकर नगर सरहद फेस-।।, रायपुर में निर्मित सामान्य आवास योजनांतर्गत ई.डब्ल्यू.एस फ्लैट क्रमांक-208, ब्लॉक-01, द्वितीय तल, श्री संजय खटवानी पिता स्व. श्री परमानंद खटवानी के नाम पर इस कार्यालय के पत्र क्रमांक-3014 दिनांक 27.04.2022 को नामांतरित है। वर्तमान में नामांतरी श्री संजय खटवानी पिता स्व. श्री परमानंद खटवानी, निवासी- म.नं.-90, न्यू गायत्री नगर, अवंति विहार रायपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त फ्लैट को क्रेता श्री एम. पापा राव पिता श्री एम. कोडैय्या, निवासी- क्वा. नं.-108/ए, के.एस.सी. वार्ड नं.-34, सेक्टर-11, जोन-2, खुर्शीवार, भिलाई, जिला- दुर्ग (छ.ग.) को विक्रय करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।
अत: उक्त फ्लैट के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।
सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com
पत्र क्र./11084/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 08-05-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 11084
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR445N00186 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती NIKITA SHARMA पिता/पति, श्री/श्रीमती NEERAJ VASHISHTH SHARMA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती RAJA SOLANKI पिता/पति, श्री/श्रीमती S/O SHRI SANT SINGH SOLANKI ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com
पत्र क्र./11092/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 08-05-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 11092
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR445R00219 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती FINTECH SERVICES LIMITED DIRECTOR AVINASH AGRAWAL पिता/पति, श्री/श्रीमती SAKHI GOPAL AGRAWAL के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SMT. KUSHAL AGRAWAL पिता/पति, श्री/श्रीमती W/O AMITABH AGRAWAL ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com
पत्र क्र./11003/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 08-05-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 11003
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR446D00594 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती SANJAY KUMAR DEWANGAN पिता/पति, श्री/श्रीमती HORI LAL DEWANGAN के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SHRI KASHI NATH PRASAD पिता/पति, श्री/श्रीमती S/O SHRI BALRAM PRASAD ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com
पत्र क्र./10901/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 08-05-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 10901
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR446E00181 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती SUNIL KUMAR NAIDU पिता/पति, श्री/श्रीमती LT. P.J. NAIDU के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SMT. KANCHAN SIHANI पिता/पति, श्री/श्रीमती W/O SHRI SANKAR LAL SIHANI ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com
पत्र क्र./11006/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 08-05-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 11006
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR445P00030 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती GOVT NAZUL MOHAN LAL SAHU पिता/पति, श्री/श्रीमती VIDESH RAM के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SMT. KAJAL GIRI पिता/पति, श्री/श्रीमती W/O SHRI UDAY KUMAR GIRI ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ ..../ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com
पत्र क्र./11089/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 08-05-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 11089
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR445B00251 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती MEHAR RIZWANI पिता/पति, श्री/श्रीमती SANNI RIZWANI के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SHRI DILIP AHUJA पिता/पति, श्री/श्रीमती S/O SHRI KISHAN AHUJA ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com
पत्र क्र./11082/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 08-05-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 11082
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR445B00387 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती KAMLESHWAR SINGH पिता/पति, श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SHRI DEEPAK AHUJA पिता/पति, श्री/श्रीमती S/O SHRI HIRANAND AHUJA ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ ..../ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, गुरुवार 09 मई 2024

अंबिकापुर की छात्रा का अपहरण कर गोवा ले जाकर दुष्कर्म, चार आरोपी गिरफ्तार

हॉस्टल से बहन के घर जा रही थी

अंबिकापुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर की एक छात्रा का अपहरण कर गोवा में ले जाकर दुष्कर्म करने वाले चार आरोपियों को पीड़िता की शिकायत पर गांधीनगर पुलिस टीम ने ये कार्रवाई की है।

मिली जानकारी के अनुसार 4 मई को थाना गांधीनगर आकर पीड़िता ने रिपोर्ट दर्ज कराया कि 15 जनवरी 2024 को अपने हॉस्टल से बहन के घर जा रही थी इसी दौरान बीच रास्ते मे आरोपी शुभम, अंशु के मोबाइल से प्रार्थिया को फोन कर घर छोड़ देने की बात बोलते हुए एक्सयूवी कार मे बिठा लिया। बाद में उसने देखा कि कार में 4 लोग मौजूद थे जिनमें से शुभम एवं अंशु उर्फ़ अनुराग प्रार्थिया के जान पहचान एवं रिस्तेदार है। जिनके साथ 2 अन्य युवक पुष्पराज एवं संजय भी थे। आरोपियों द्वारा प्रार्थिया कों कार मे बिठाकर मारपीट कर जान से मारने की धमकी देकर कार में दुष्कर्म किया। प्रार्थिया कों जबरन कार मे बैठाकर गोवा ले गए।

यहां सभी आरोपियों द्वारा जबरन दुष्कर्म किया गया। घटना के बाद 22 जनवरी को पीडिता को उसकी बहन के घर छोड़ दिया गया। मामले की शिकायत पर थाना गांधीनगर में धारा 323, 366, 506, 376 (डी) भा.द.वि. का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया। पुलिस टीम द्वारा मामले के आरोपियों का पता तलाश किया जा रहा था। पुलिस टीम के सतत प्रयास से मामले के आरोपियों की घेराबंदी कर पकड़कर पूछताछ किया गया। आरोपियों द्वारा अपना नाम (1) शुभम उजेरिया उम्र 28 वर्ष (2) अंशु उर्फ अनुराग उजेरिया उम्र 22 साल दोनों निवासी शिवपुर, बरदर थाना खड़गवां, जिला मनेन्द्रगढ (3) संजय चौधरी उम्र 27 साल सा0 पोड़ीडीह, छापर थाना खडगवां, जिला मनेन्द्रगढ (4) पुष्पराज लकडा उम्र 19 साल सा0 कुम्दा कॉलोनी, करमपुर थाना विश्रामपुर जिला सूरजपुर का होना बताये। आरोपियों कब्जे से 3 नग मोबाइल, एक्स.यू.वी. वाहन बरामद किया गया है।

बहन को करता था बार-बार फोन, भाई ने कर दी हत्या

भाटापारा (विश्व परिवार)। भाटापारा में हुई हत्या के मामलों में पुलिस ने पांच आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपित ने बताया कि सुनील डिक्सेना उसकी बहन को बार-बार फोन कर परेशान करता था। उसका नंबर ब्लाक करने के बाद भी दूसरे नंबरों से फोन लगाकर परेशान करता था। इससे परेशान होकर आरोपित ने अपने साथियों के साथ सुनील की हत्या कर दी। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, टानेश कुमार ध्रुव निवासी संतमाता कर्मा वार्ड ने शहर थाने में रिपोर्ट लिखाई कि सुनील डिक्सेना (राजू जायसवाल) उम्र 47 वर्ष उसके मकान में किराए से रहता है। शुक्रवार को मुझे फोन सूचना मिली कि किराएदार सुनील डिक्सेना अपने घर के सामने बेहोश पड़ा है। उसे इलाज कराने शासकीय अस्पताल भाटापारा ले गए, जहां इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। शहर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। मृतक के शरीर की सामान्य जांच पर से मृतक के साथ गंभीर रूप से मारपीट किए जाने से, उसकी मृत्यु हो जाना प्रतीत हो रहा था। शहर थाना प्रभारी योगिताबाली खापर्डे के साथ उनकी टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। आसपास के लोगों से विस्तृत पूछताछ की गई। कैमरों के फुटेज की जांच की। तकनीकी विश्लेषण व पूछताछ के आधार पर आरोपितों की पहचान हुई। मृतक सुनील डिक्सेना को कामेश यादव, राजू ध्रुव, मुकेश व अन्य लोगों साथ देखा गया था। संदेह के आधार पर इन आरोपितों को पकड़कर कड़ाई से पूछताछ की गई। इसके बाद आरोपितों ने हाथ मुक्का व हाकी स्टिक से गंभीर रूप से मारपीट करना स्वीकार किया। आरोपित ने बताया कि उसकी बहन की सगाई तीन महीने पहले हो चुकी है, जिसमें सुनील, आरोपित की बहन को बार-बार फोन करके परेशान करता रहता था। नंबर ब्लाक करने पर सुनील दूसरे नए नंबरों से बहन करे बार-बार फोन कर परेशान कर रहा था। यह बात उसकी बहन ने अपने भाइयों (आरोपित) को बताई। इसके बाद पांच आरोपितों ने हाथ, मुक्का व हाकी स्टिक से सुनील के साथ मारपीट की। जब वजह बेहोश हो गया मोटरसाइकिल में बैठाकर उसके किराए के घर के सामने लाकर छोड़ दिया। सभी पांच आरोपितों को पांच मई को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करते हुए जेल भेजने की प्रक्रिया की जा रही है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, मामले में पांच आरोपित मुकेश कुमार 24 वर्ष निवासी संत माता कर्मा वार्ड, अश्वनी साहू 22 वर्ष निवासी परशुराम वार्ड, दीपक धीवार 21 वर्ष निवासी परशुराम वार्ड, कामेश यादव 25 निवासी संतमाता कर्मा वार्ड, राजू ध्रुव 22 वर्ष निवासी संत माता कर्मा वार्ड भाटापारा को गिरफ्तार किया गया है।

समर कैंप में बच्चों को सिखाया जा रहा डांस के स्टेप

कोरबा (विश्व परिवार)। इंडस पब्लिक स्कूल- दीपका में समर कैंप पर बच्चे डांस एक्टिविटी में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। एरोबिक्स,कत्थक , वेस्टर्न आदि अनेक विधाओं में नृत्य की कलाएँ बच्चों को सिखाई जा रहीं हैं। नृत्य शिक्षिका श्रीमती रूमकी हलदर ने बताया कि डांस करने से न सिर्फ हमारा शरीर फिट रहता है अपितु हमारा मन भी स्वस्थ एवं तनाव रहित रहता है। समर कैंप में डांस प्रशिक्षण के लिए विशेष रुप से हरिशंकर सारथी एवं रूमकी मैडम लगातार विभिन्न प्रकार के नृत्यों का प्रशिक्षण समर कैंप में आए हुए बच्चों को दे रहे हैं। समर कैंप में अलग-अलग स्कूलों के बच्चों ने इंडस पब्लिक स्कूल- दीपका में अपना पंजीयन कराया है। बच्चे अपनी रुचि के अनुसार अलग-अलग कलाओं का प्रशिक्षण ले रहे हैं लेकिन जब बात करें डांस की तो बच्चों की पहली पसंद की सूची में डांस का नाम अवश्य आता है।विभिन्न एज ग्रुप के बच्चों को अलग-अलग रो-वाइज डिवाइड कर प्रशिक्षकों द्वारा डांस के अलग-अलग विधाओं का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। बच्चों के उम्र एवं रुचि के अनुसार गीतों का चुनाव कर डांस के स्टेप बच्चों को बताया जा रहा है। बच्चे अपनी पसंद के गानों में जी भरकर झूमते हैं। डांस करते समय बच्चे खूब एंजॉय करते हैं। विद्याल य के प्राचार्य डॉ.संजय गुप्ता ने कहा कि डांस करने के अनेक फायदे भी है।

कलेक्टर ने मानपुर विकासखंड के खरीदी केन्द्रों से धान उठाव का किया निरीक्षण

मोहला (विश्व परिवार)। कलेक्टर एस. जयवर्धन ने आज मानपुर विकासखंड के उपार्जन केन्द्रो से धान उठाव का निरीक्षण किया। इस दौरान कलेक्टर ने उपार्जन केन्द्र सीतागांव का निरीक्षण कर उपार्जन केन्द्र में फैले हुये धान को व्यवस्थित करने प्रभारी अधिकारी को निर्देशित किया गया। उपार्जन केन्द्र में अपने समक्ष धान का भौतिक सत्यापन कराया गया जिसमें धान की कमी पाये जाने पर तत्काल कारण बताओ नोटिस जारी कर जवाब मांगा गया हैं। जवाब संतुष्टी प्रद नही पाये जाने पर कड़ी कार्यावाही करने निर्देशित किया गया है। इसी क्रम मे उपार्जन केन्द्र औंधी एवं सरखेड़ा का निरीक्षण कर प्रभारी के विरुध्द नोटिस जारी किया गया है। समिति प्रबंधकों को बताया गया कि शासन के निर्देशानुसार उपार्जन केन्द्रों मे धान की शार्टेज मान्य नहीं किया जायेगा।

मां व बेटे का फांसी पर लटका मिला शव

अंबिकापुर (विश्व परिवार) । जिले के सनावल थाना के पचावल गांव में मां व बेटे का फांसी पर लटका शव मिला है। मामला आत्महत्या का है या हत्या के बाद दोनों का शव फांसी पर लटकाया गया है इसकी जांच पुलिस कर रही है। घटना से जुड़े जो तथ्य सामने आए हैं उससे मामला संदिग्ध प्रतीत हो रहा है। मृतका की मां ने ससुराल वालों पर हत्या का आरोप लगाया है। पचावल गांव से लगे जंगल में सोमवार को महुआ बीनने गए ग्रामीणों ने एक महुआ के पेड़ पर महिला एवं किशोर का शव फांसी पर झूलता देखा। शव पचावल निवासी लक्ष्मी यादव (36) एवं उसके पुत्र आशीष यादव (14) की थी। मौके पर पहुंचे स्वजन ने शव को फांसी के फंदे से उतार लिया था। पुलिस जांच में पता चला कि मृतका लक्ष्मी यादव 29 अप्रैल को इलाज कराने के नाम से घर से निकली थी। वहीं उसका पुत्र आशीष यादव 27 अप्रैल को नाना के यहां जाने के नाम पर निकला था। दोनों वापस नहीं लौटे थे। सोमवार सुबह दोनों का शव गांव के बाहर फांसी के फंदे पर झूलता मिला।स्वजन के अनुसार लक्ष्मी का मोबाइल खराब हो गया था और उससे संपर्क नहीं हुआ था।पुलिस जांच में पता चला है कि लक्ष्मी यादव अपने पति हृदय नारायण यादव की दूसरी पत्नी थी। हृदय नारायण यादव की पहली पत्नी से दो बच्चे थे, जिनमें छोटे बेटे ने पिछले वर्ष फांसी लगा ली थी। बड़े बेटे का विवाह एक माह पूर्व हुआ है। फांसी पर झूलता मिला आकाश लक्ष्मी यादव का बड़ा बेटा था। उसका छोटा बेटा 10 वर्ष का है जो अपने नाना-नानी के पास था। मृतका की मां मानमति यादव का कहना है कि उसकी पुत्री एवं दामाद का पहले से विवाद चल रहा था। दामाद उसके चरित्र पर संदेह करता था। दामाद ने फोन कर कहा था कि वह उसकी हत्या कर देगा। मानमति ने कहा कि दोनों की हत्या कर शव को फांसी के फंदे पर लटकाया गया है। मानमति ने कहा कि लक्ष्मी स्वयं आत्महत्या कर सकती है, वह बच्चे को फांसी के फंदे पर नहीं लटका सकती। साक्ष्य छिपाने के लिए लड़के की भी हत्या कर दोनों के शवों को लटका दिया गया है। सनावल थाना प्रभारी अजय साहू ने कहा कि पुलिस मामले में जांच कर रही है। दोनों शवों का पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिलने के बाद पता चल सकेगा कि उनकी मौत की कारण क्या है? मृतका की मां ने हत्या का आरोप लगाया है। पुलिस सभी पहलुओं पर जांच कर रही है।

एनटीपीसी कोरबा ने महिला संविदा कर्मियों के लिए स्तन कैंसर शिविर का आयोजन किया

कोरबा (विश्व परिवार)। स्तन कैंसर भारत में महिलाओं में होने वाला दूसरा सबसे आम कैंसर है और कैंसर से होने वाली मौतों का सबसे बड़ा कारण है। हालांकि, अगर शुरुआती चरण में इसका पता लग जाए और इसका इलाज हो जाए तो यह भी ठीक हो जाता है। हालांकि शहरी आबादी में इसके होने की दर ज्यादा है, लेकिन शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण ग्रामीण महिलाओं को इसका सबसे ज्यादा खामियाजा भुगतना पड़ता है। अल्ट्रासोनोग्राफी शुरुआती पहचान के लिए एक बेहतरीन उपकरण है क्योंकि यह सस्ती, आसानी से उपलब्ध है और स्तन में छोटे घावों के प्रति संवेदनशील है और यह अच्छी सुविधा एनटीपीसी कोरबा अस्पताल में उपलब्ध है। मैत्री महिला समिति, जैसा कि सभी जानते हैं, एनटीपीसी कोरबा के आस-पास के गांवों में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने और शिक्षित करने की दिशा में समय-समय पर प्रयास करती रही है। इस बार एमएमएस (मैत्री महिला समिति) और एनटीपीसी अस्पताल, कोरबा ने हमारे समाज की वंचित बहनों की सेवा में एक कदम आगे बढ़ाने के लिए हाथ मिलाया है। एनटीपीसी कोरबा अस्पताल परिसर में 3 मई 2024 को स्तन कैंसर जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन एमएमएस की अध्यक्ष श्रीमती राखी माहेश्वरी और बीयूएच एनटीपीसी कोरबा के श्री सरित माहेश्वरी ने किया। इस अवसर पर एनटीपीसी कोरबा के सीएमओ डॉ. विनोद कोल्हटकर, एमएमएस के पदाधिकारी, विभागाध्यक्ष और यूनियन व एसोसिएशन के सदस्य भी मौजूद थे। शिविर कई चरणों में आयोजित किया जाएगा। पहले चरण का लक्ष्य बस्ती की संविदा महिला श्रमिकों और घरेलू सहायिकाओं को लाभ पहुंचाना था। डॉ. प्रतिभा अर्चना दास, वरिष्ठ परामर्शदाता (प्रसूति एवं स्त्री रोग) और डॉ. परिमिता हुरा, परामर्शदाता (रेडियोलॉजी) ने जांच की। डॉ. प्रतिभा दास ने जांच के पहले चरण के रूप में नैदानिक परीक्षण किया। अगले चरण के लिए उपयुक्त पाई गई महिलाओं की डॉ. परिमिता हुरा ने अल्ट्रासाउंड जांच की।

ग्रामीणों पर भालू ने किया हमला

सारंगढ़ (विश्व परिवार)। तेंदूपत्ता तोड़ने जंगल गए दो लोगों पर ने भालू ने अचानक हमला कर दिया। दोनों घायलों को उपचार के लिये अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना की जानकारी मिलने के बाद वन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंचकर आगे की कार्रवाई में जुट गई है। जानकारी के अनुसार सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले बरमकेला क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम झिलगीटर निवासी फूलबाई जायसवाल पति पुरूषोत्तम जायसवाल एवं घुंचापाली निवासी भरत नायक तेंदूपत्ता तोड़ने बोसला खोलिया तालाब की तरफ गए हुए थे, जहां उस क्षेत्र के जंगलों में विचरण कर रहे भालू ने दोनों पर अचानक हमला कर दिया। मौके पर मौजूद अन्य लोगों के द्वारा किसी तरह हो हल्ला करके भालू को खदेड़ा गया तब जाकर दोनों की जान बची, जिसके बाद दोनों घायलों को उपचार के लिये बरमकेला अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उनका उपचार जारी है। भालू के हमले से दो लोगों के घायल होने की जानकारी मिलने के बाद वन विभाग की टीम घायलों का हाल चाल जानते हुए उनके परिजनों को तत्कालिक सहायता राशि दी गई है।

संक्षिप्त समाचार

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म, आरोपी फरार

कोरबा (विश्व परिवार)। जिले के जमनीपाली छ.ग. निवासी जॉंटी एडविन आनंद पिता अजीत कुमार आनंद के द्वारा दुरपा रोड निवासी युवती के साथ शादी का झॉंसा देकर शारीरिक शोषण किया गया। घटना के संबंध में पीड़िता ने बताया कि 2019 में फेसबुक के माध्यम से जॉन्टी एडविन का फ्रेंड रिक्वेस्ट आने पर उससे बातचीत शुरू हुई। इस बीच उसने पीड़िता को अपने विश्वास में लेकर अलग घर में रहने पर जोर दिया जिस पर युवती ने विश्वास पर अपना घर छोड़ जॉन्टी एडविन आनंद के साथ उरगा हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में मकान किराया पर लेकर रहने लगी लगभग दो साल साथ रहने के उपरांत जोंटी एडविन आनंद के माता पिता उनके उरगा स्थित मकान में आया और शादी करने की बात कहकर जॉन्टी अपने माता पिता के साथ अपने घर लौट गया। कुछ दिनों पश्चात युवती की नियुक्ति अंबिकापुर के पास रघुनाथनगर में लेक्चर के रूप में हुई। जॉटी के साथ बातचीत करने पर शादी करूँगा, अभी समय है कहकर लगातार टालमटोल किया जाता रहा फिर युवती द्वारा शादी करने की बात करने पर जोन्टी ने युवती का फोन नंबर ब्लॉक कर दिया। युवती द्वारा उसके दोस्तों और परिवार वालों से संपर्क करने पर पता चला की जोंटी की शादी की बातचीत किसी अन्य जगह चल रही है जिस पर युवती द्वारा सीटी कोतवाली कोरबा में जॉन्टी एडविन आनंद के खिलाफ अपराध दर्ज कराया गया।

धारदार हथियार के साथ एक आदतन बदमाश गिरफ्तार

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। शहर की थाना कोतवाली पुलिस ने चाकू दिखाकर आम लोगों को डरा धमका रहे एक आदतन अपराधी को गिरफ्तार किया है तथ उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही की है। मिली जानकारी के अनुसार पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा तथा नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेंद्र नायक राजनादगांव के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी निरीक्षक एमन साहू के नेतृत्व मे असामाजिक तत्वों के विरूद्व चलाये जा रहे अभियान के तहत सोमवार को मुखबीर से सूचना मिली कि मोनू बांसफोड़ नामक व्यक्ति बैगापरा अटल आवास चौक के पास अपने हाथ में चाकू लेकर लोगो को डरा धमका रहा है, आसपास के लोग दहशत में है। कि सूचना पर तत्काल मौका पहुंचकर घेराबंदी कर पकड़े नाम पता पूछने पर अपना नाम व पता मोनू बांसफोड़ पिता गणेश बांसफोड़ उम्र 19 वर्ष साकिन अटल आवास बैगापारा लखोली थाना कोतवाली जिला राजनांदगांव (छग) बताया, जिसके कब्जे से एक नग लोहे का धारदार चाकू जप्त कर कब्जा पुलिस लिया गया। आरोपी के विरूद्व धारा 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही कर विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर न्यायालय पेश कर जेल भेजा गया है। बता दें कि गिरफ्तार आरोपी एक आदतन अपराधी है, जिसके खिलाफ पूर्व में धारा 294, 323, 506, 34 भादवि0 एवं धारा 3 (2) छग जुआं प्रतिषेध अधिनियम 2022 कायम कर चालान न्यायालय पेश किया गया है

चर्चित यूट्यूबर राजेश रवानी चाहने वालों से मिले

रामानुजगंज (विश्व परिवार)। देश के जाने-माने चर्चित ट्रक ड्राइवर एवं युटुबर राजेश रवानी आज सिलीगुड़ी से नागपुर के 1500 किलोमीटर यात्रा के दौरान रामानुजगंज के रिंग रोड में रुके जहां उन्होंने अपने चाहने वालों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने कहा कि आज मेरे 15 लाख से अधिक यूटुब सब्सक्राइबर हैं एवं मुझे लाखों रुपए की आमदनी भी होती है परंतु मैंने अपना मूल पैसा नहीं छोडा है। अपने ड्राइवर साथियों की परेशानियां, कठिनाइयां एवं संघर्ष को मुझे दिखाना अच्छा लगता है। राजेश रवानी अपने खुद की खरीदी कंटेनर में मैगी लोड कर सिलीगुड़ी से नागपुर जा रहे थे राजेश रवानी को फॉलो करने वाले अमित गुप्ता एवं पियूष गुप्ता उनके रामानुजगंज आने का इंतजार कर रहे थे जैसे ही वे झारखंड बॉर्डर क्रॉस कर छत्तीसगढ़ पहुंचे तो तत्काल अमित गुप्ता एवं पियूष गुप्ता एवं अन्य लोग मिलने पहुंचे एवं उनकी सादगी सरलता के साथ बनाए जाने वाले वीडियो की जमकर सराहना की। रिंग रोड में राजेश रवानी अपने पुत्र सागर रवानी के साथ रुके थे जहां बड़ी संख्या में चाहने वाले मिलने पहुंचने लगे सभी ने उनके साथ सेल्फी खींचाई एवं उनके सभी वीडियो की सराहना की। राजेश रवानी ने बताया कि मैं 2021 से यूट्यूब में वीडियो बनाकर ट्रक ड्राइवर के जिंदगी के बारे में बताते आ रहा हूं परंतु जब मेरे 23 वर्षीय पुत्र सागर रवानी का 2022 से सोशल मीडिया हैंडल करने में साथ मिला तो मेरे फॉलोअर की संख्या तेजी से बड़ी मैं पहले जहां दूसरे का ट्रक चलाता था वही अभी 5 माह पहले खुद का कंटेनर खरीदा हूं जिसे मैं एवं मेरा पुत्र दोनों मिलकर चलाते हैं। आनंद महिंद्रा ने बताया था अपनी प्रेरणा...... आनंद महिंद्रा ने राजेश रवानी को अपनी प्रेरणा बताते हुए ईससे कोई फर्क नहीं पड़ता है आपकी उम्र कितनी है आपका पैसा कितना मामूली है नई तकनीक को अपनाने और खुद को नया रूप देने में कभी भी देर नहीं करनी चाहिए।

संपादकीय

छोटी सी योजना की शुरुआत

प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने घोषणा की कि सुप्रीम कोर्ट अब व्हाट्सऐप संदेशों द्वारा जानकारी साझा करेगा। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट की मौजूदगी के पिच्छत्तरवें वर्ष में यह छोटी सी योजना की शुरुआत की है। व्हाट्सऐप के रोजाना की जिंदगी में शामिल होने और इसके शक्तिशाली संचार सुविधा होने की बात भी उन्होंने की। इस पहल के अंतर्गत एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड तथा शीर्ष अदालत के समक्ष निजी तौर पेश होने वाले वादियों को मुकदमा ऑनलाइन दाखिल करने, वाद सूची, आदेशों तथा निर्णयों के संबंध में जानकारी प्राप्त होगी। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने इसे क्रांतिकारी कदम बताते हुए इसकी सराहना की। प्रधान न्यायाधीश ने व्हाट्सऐप नम्बर साझा करते हुए स्पष्ट किया कि इस पर कॉल या संदेश प्राप्त नहीं होंगे। निःसंदेह यह सबसे बड़ी अदालत को पेपरलेस बनाने की तरफ उठा बड़ा कदम है। तकनीक संबंधी सुविधाओं को जितनी जल्दी हो सके रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल कर लेना उचित होता है। प्रधान न्यायाधीश निरंतर अदालती काम को लेकर ऐसी व्यवस्थाएं दे रहे हैं। उन्हें सुप्रीम कोर्ट जजों में सबसे ज्यादा फैसले लिखने का रुतबा प्राप्त है। छह वर्ष के भीतर 513 फैसले लिख चुके हैं। न्याय व्यवस्था को सुचारू और पारदर्शी बनाने के लिए समय-समय पर उन्होंने बड़े कदम उठाए हैं। विभिन्न फैसलों को उन्होंने क्षेत्रीय भाषा में अनुदित करवाने की व्यवस्था करके तथा हिन्दी, तमिल, उड़िया और गुजराती में फैसलों का अनुवाद करने के लिए समिति का गठन भी किया। देश में 48 करोड़ से अधिक व्हाट्सऐप प्रयोगकर्ता हैं, जो 2025 तक 80 करोड़ तक पहुंचने का अंदाजा है। हालांकि व्हाट्सऐप मेटा टेक्नॉलाजी कंपनी की सुविधा है, जिसके सीईओ मार्क जकरबर्ग हैं। किसी भारतीय संचार संस्थान को इस जरूरत को समझते हुए आगे कदम बढ़ाने की सख्त जरूरत है। सरकार, देश के अन्य बड़े संस्थान और गोपनीय दस्तावेज के लिए देसी तकनीक का प्रयोग किया जाना उचित है। तकनीक के मामले में हम दूसरों पर निर्भर होते जा रहे हैं। यह बड़ी चुनौती है। बावजूद इसके तकनीक का इस्तेमाल सुविधाओं के लिए करना वक्त की मांग है, इसके बिना काम नहीं चल सकता।

भाषाओं को बचाने की भारतीय पहल

प्रमोद भार्गव

प्रतिस्पर्धा के दौर में मातृभाषा को लेकर युवाओं में हीनभावना भी पनप रही है। भाषाओं को बचाने के लिए समय की मांग है कि क्षेत्र विशेष में स्थानीय भाषा के जानकारों को ही निगमों, निकायों, पंचायतों, बैंकों और अन्य सरकारी दफ्तरों में रोजगार दिए जाएं। इससे अंग्रेजी के फैलते वर्चस्व को चुनौती मिलेगी और ये लोग अपनी भाषाओं व बोलियों का संरक्षण तो करेंगे ही, उन्हें रोजगार का आधार बनाकर गरिमा भी प्रदान करेंगे। ऐसी सकारात्मक नीतियों से ही युवा पीढ़ी मातृभाषा के प्रति अनायास पनपने वाली हीनभावना से भी मुक्त होगी। इस नजरिए से 52 क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई एक अनूठी और आवश्यक पहल ह कोई भी भाषा जब मातृभाषा नहीं रह जाती तो उसके प्रयोग की अनिवार्यता में कमी और उससे मिलने वाले रोजगार मूलक कार्यों में भी कमी आने लगती है। पिछले 75 सालों में हमारी भाषाओं और बोलियों के साथ यही होता रहा है, परंतु अब नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (एनईपी) को लागू करने की दिशा में उल्लेखनीय पहल करते हुए केंद्र सरकार नए सत्र से पांच नए उपाय करने जा रही है। इनमें बच्चों को मातृ, घरेलू और क्षेत्रीय भाषा में पाठ्य पुस्तकें पढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। इस लक्ष्यपूर्ति के लिए 52 प्रवेशिकाएं अर्थात पाठ्य-पुस्तकें तैयार की गई हैं। इनसे छात्र-छात्राओं से लेकर वयस्क तक वर्णमाला और दो अंकों तक गणित सीख सकेंगे। पहले चरण में 17 राज्यों की राजभाषा व स्थानीय भाषा में 52 पुस्तकें मैसूर के भारतीय भाषा संस्थान और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने तैयार की हैं। देश में ऐसी 121 भाषाएं हैं जिन्हें क्षेत्रीय लोग स्थानीय स्तर पर लिखने व बोलने में प्रयोग करते हैं। जल्दी ही देश के बाकी राज्यों की आंचलिक भाषाओं में प्रवेशिका उपलब्ध करा दी जाएंगी। इन पाठ्य पुस्तकों का उपलब्ध होना न केवल विद्यार्थियों के लिए, बल्कि विलोपित हो रही मातृभाषाओं का अस्तित्व बचाए रखने की

परिवर्तनकारी पहल है। यह पहल निर्बाध और भविष्यवादी शिक्षण परिदृश्य तैयार कर भारतीय भाषाओं में सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देगी। इससे नई शिक्षा नीति का दृष्टिकोण साकार होगा और शालेय शिक्षा में महत्वपूर्ण बदलाव आएंगे। सरकार ने राष्ट्रीय विद्या समीक्षा केंद्र का राज्य इकाइयों व 200 डीटीएच चैनलों के साथ एकीकरण का निर्णय भी लिया है। इस हेतु सरकार ने 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए 22 क्षेत्रीय व प्रादेशिक भाषाओं में चैनल तैयार कर लिए हैं। ये बिना इंटरनेट चलेंगे। भविष्य में ये चैनल ओटीटी और यू-ट्यूब पर भी उपलब्ध होंगे। भारत में ऐसे हालात सामने भी आने लगे हैं कि किसी एक इनसान की मौत के साथ उसकी भाषा का भी अंतिम संस्कार हो जाए। 26 जनवरी 2010 को अंडमान द्वीप समूह की 85 वर्षीय बोआ के निधन के साथ ग्रेट-अंडमानी भाषा 'बो' भी हमेशा के लिए विलुप्त हो गई। इस भाषा को जानने, बोलने और लिखने वाली वे अंतिम इनसान थीं। इसके पूर्व नवंबर 2009 में एक और महिला बोरो की मौत के साथ खोरा भाषा का अस्तित्व समाप्त हो गया था। नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी एंड लिविंग टंग्स इंस्टीट्यूट फॉर एंडेंजर्ड लैंग्वेजेज के अनुसार हरेक पखवाड़े एक भाषा की मौत हो रही है। सन् 2100 तक भूमण्डल में बोली जाने वाली सात हजार से भी अधिक भाषाओं का लोप हो सकता है। इस दायरे में आने वाली खासतौर से आदिवासी व जनजातीय भाषाएं हैं जो लगातार उपेक्षा का शिकार होने के कारण विलुप्त हो रही हैं। ये भाषाएं बहुत उन्नत हैं और पारंपरिक ज्ञान का भंडार हैं। भारत सरकार ने उन भाषाओं के आंकड़ों का संग्रह किया है जिन्हें 10 हजार से अधिक लोग बोलते हैं। 2001 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार ऐसी 121 भाषाएं और 234 मातृभाषाएं हैं। भाषा-गणना की ऐसी बाध्यकारी शर्त के चलते जिन भाषा व बोलियों को बोलने वाले लोगों की संख्या 10 हजार से कम है, उन्हें गिनती में शामिल ही नहीं किया गया। पूरी दुनिया में सात्ताईस सौ भाषाएं संकटग्रस्त हैं। इन भाषाओं में असम की 17 भाषाएं शामिल हैं। यूनेस्को द्वारा जारी एक जानकारी के मुताबिक असम की देवरी, मिसिंग, कछारी, बेइटे, तिवा और कोच राजवंशी सबसे संकटग्रस्त भाषाएं हैं। इन भाषा-बोलियों का प्रचलन लगातार कम हो रहा है। नई पीढ़ी के सरोकार असमिया, हिन्दी और अंग्रेजी तक सिमट गए हैं। इसके बावजूद 28 हजार लोग देवरीभाषी, मिसिंगभाषी साढ़े पांच लाख और बेइटेभाषी करीब 19 हजार लोग अभी बाकी हैं। इनके अलावा असम की बोडो, कार्बो, डिमासा, विष्णुप्रिया, मणिपुरी और काकबरक भाषाओं के जानकार भी लगातार सिमटते जा रहे हैं। वे ही भाषाएं बोलियों और लिपियों के रूप में जीवित रह सकती हैं जो उपयोग में बनी रहें। पूरी दुनिया में 15 हजार से अधिक भाषाएं दर्ज हैं, लेकिन आज उनमें से आधी से ज्यादा मर गई हैं। इसका कारण इन्हें उपयोग से वंचित कर देना है। कई लोग भाषाओं की विलुप्ति का कारण आक्रांताओं के हमलों को मानते हैं। भारत में भी इस स्थिति को भाषाओं की विलुप्ति का कारण माना गया, लेकिन यह तथ्य थोथा है। फ्रांस में भी यह भ्रम फैला हुआ है। फ्रेंच भाषियों को यह आशंका सता रही है कि वहां कीयुवा पीढ़ी अंग्रेजी के प्रति आकर्षित है, इसलिए वहां अंग्रेजी से मुक्ति के उपाय सुझाए जा रहे हैं। नाइजीरिया और केमरून की बिक्या भाषाएं प्रयोग में नहीं रहने के कारण लुप्त हुईं। इस भाषा को प्रचलन में बनाए रखने वाले एक-एक कर जब मरते चले गए तो उनके साथ भाषा भी काल में समाती चली गई। वर्तमान में विश्व की 90 प्रतिशत भाषाओं और बोलियों पर विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है। वैसे भाषाओं का मरना हर युग और हर देश में एक सिलसिला बना रहा है। भारत की सबसे प्राचीन ब्राह्मी लिपि को आज बांचने वाला कोई नहीं है। विकास के साथ जो भाषा जुड़ी होती है, उसकी जीवंतता बनी रहती है। आज अंग्रेजी जहां भाषाओं की विलुप्तता की दृष्टि से खलनायिका साबित हो रही है, वहीं इसके महत्व को एकाएक इसलिए नजरअंदाज नहीं किया जा सकता क्योंकि यह आधुनिक तकनीक के व्यावहारिक और व्यावसायिक उपयोग का विश्वव्यापी आधार बन गई है। दुनिया की युवा पीढ़ी विश्व समाज से जुड़ने के लिए अंग्रेजी की ओर आकर्षित है, लेकिन यदि अंग्रेजी इसी तरह पैर पसारती रही तो दुनिया में भाषाई एकरूपता छा जाएगी, जिसकी वटवृक्षी छाया में अनेक भाषाएं मर जाएंगी। भारत की तमाम स्थानीय भाषाएं व बोलियां अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के कारण संकटग्रस्त हैं।

विशेष लेख

समूचा विश्व भयाक्रांत

शांति के तमाम उपायों के बीच दुनिया भर में सैन्य खर्च, शस्त्रीकरण एवं घातक हथियारों की होड़ खतरे की घंटी हैं। शस्त्रीकरण के भयावह दुष्परिणामों से समूचा विश्व भयाक्रांत है। हर पल आणविक हथियारों के प्रयोग को लेकर दुनिया डर के साये में जी रही है। इसीलिए आज अयुद्ध, निशस्त्रीकरण एवं शांति की आवाज चारों ओर से उठ रही हैं। शक्ति संतुलन के लिए शस्त्र-निर्माण एवं शस्त्र संग्रह की बात से किसी भी परिस्थिति में सहमत नहीं हुआ जा सकता क्योंकि इससे अपव्यय तो होता ही है, साथ ही गलत हथियारों के हाथों में पड़कर दुरुपयोग की आशंकाएं बढ़ जाती हैं। ताजा घटनाक्रम को देखें तो एक ओर रूस और यूक्रेन आमने-सामने हैं, दूसरी तरफ इस्राइल और ईरान के बीच तल्खी भी चरम पर है। चीन और ताइवान के बीच भी रह-रह कर युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। ऐसे माहौल में सवाल स्वाभाविक है कि क्या सचमुच दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की ओर बढ़ते हुए घातक हथियारों की प्रयोगभूमि बन रही है? सवाल और भी हैं। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट की हथियारों पर ताजा रिपोर्ट ऐसे ही सवाल खड़े कर रही है। दुनिया सीधे-सीधे दो खेमों में बंट गई है। स्टॉकहोम की रिपोर्ट के आंकड़े चौंकाने वाले ही नहीं, डराने वाले भी हैं। शांति के तमाम उपायों के बीच दुनिया भर में सैन्य खर्च का बढ़ना एवं नये-नये हथियारों का बाजार गरम होना, चिंताजनक है। रिपोर्ट में खास बात यह है कि दुनिया में सर्वाधिक सैन्य खर्च करने वाले देशों में भारत चौथे नंबर पर बरकरार है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार आयातक देश बन चुका है। रिपोर्ट में इस बात का खुलासा हुआ है। भारत ने बीते पांच साल में दुनिया में सबसे ज्यादा हथियार खरीदे। रिपोर्ट में बताया गया है कि यूरोप का हथियार आयात 2014-18 की तुलना में 2019-23 में लगभग दोगुना बढ़ा है, जिसके पीछे रूस-यूक्रेन युद्ध बड़ा कारण माना जा रहा है। इसके अलावा, पिछले पांच वर्षों में सबसे ज्यादा हथियार एशियाई देशों ने खरीदे। इस लिस्ट में रूस-यूक्रेन युद्ध ने देश के रक्षा निर्यात को काफी प्रभावित किया है। इस कारण पहली बार रूस हथियार निर्यात में तीसरे स्थान पर पहुंच गया है तो अमेरिका पहले और फ्रांस दूसरे नम्बर पर हैं। पिछले 25 सालों में पहली बार अमेरिका एशिया और ओशिनिया का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता रहा। अमेरिका की हथियारों की होड़ एवं तकनीकीकरण की दौड़ पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है। अब तो दुनिया के साथ-साथ अमेरिका स्वयं ही हथियारों एवं हिंसक मानसिकता का शिकार है। अमेरिका ने दुनिया पर आधिपत्य स्थापित करने एवं अपने शस्त्र कारोबार को पनपाने के लिए जिस अपसंस्कृति को दुनिया में फैलाया है, उससे पूरी मानवता पीड़ित है। अमेरिका ने नई विश्व व्यवस्था (न्यू वर्ल्ड ऑर्डर) की बात की है, खुलेपन की बात की है। लगता है कि 'विश्व मानव' का दम घुट रहा है, और घुटन से बाहर आना चाहता है। विडंबना देखिए, अमेरिका दुनिया का सबसे अधिक शक्तिशाली और सुरक्षित देश है, लेकिन उसके नागरिक सबसे अधिक असुरक्षित और भयभीत नागरिक हैं। वहां की जेलों में आज जितने कैदी हैं, दुनिया के किसी देश में नहीं हैं। कई वाकये हो चुके हैं कि किसी रेस्तरां, होटल या फिर जमावड़े पर अचानक किसी सिरफिरे ने गोलीबारी शुरू कर दी और बड़ी तादाद में लोगों को मार डाला। 2014 में अमेरिका में हत्या के दर्ज सवा चौदह हजार मामलों में अड़सठ फीसद मामलों में बंदूकों का इस्तेमाल किया गया था। दरअसल, मनुष्य के भयभीत मन को युद्ध एवं हथियारों की विभीषिका से मुक्ति दिलाना जरूरी है। युद्धरत देशों में शांति स्थापित कर, युद्ध-विराम करके विश्व को निर्भय बनाना चाहिए। निश्चय ही यह किसी एक या दूसरे देश की जीत नहीं, बल्कि समूची मानव-जाति की जीत होगी। यथार्थ यह है कि अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, पर अंधापन मृत्यु-विनाश की ओर। रूस ने अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का अहसास गलत समय पर गलत उद्देश्य के लिए कराया है। युद्ध से तबाही रूस-यूक्रेन की नहीं, बल्कि समूची दुनिया की तबाही होगी, क्योंकि रूस परमाणु विस्फोट करने को विवश होगा जो दुनिया की बड़ी चिंता का सबब है। बड़े शक्तिसंपन्न देशों को युद्ध विराम के प्रयास करने चाहिए। लेकिन प्रश्न है कि जो देश हथियारों के निर्माता हैं, वे क्यों चाहेंगे कि युद्ध विराम हो। जब तक शक्तिसंपन्न देशों की शस्त्रों के निर्माण एवं निर्यात की भूख शांत नहीं होती तब तक युद्ध की आशंकाएं मैदान में, समुद्र में, आकाश में तैरती रहेंगी।

चुनावी समय में सोशल मीडिया बना चाणक्य

डा. निधि शर्मा

इसका ताजा उदाहरण रणवीर सिंह एवं आमिर खान के साथ हुई घटना से पता लगता है। इन दुविधाओं का समाधान जनता की तार्किक सावधानी ही है, क्योंकि कोई सूचना जब अत्यधिक वेग, हिंसा व उत्तेजना पैदा करे तो शंकित होना लाजिमी है। कुछ देर ठहरिए और मन को शांत कर सोचिए। क्योंकि जनता के जुड़ाव के लिए असंख्य सूचना का ऐसा समुद्र खड़ा कर दिया गया है जिसमें तैरना स्वयं सीखना पड़ेगा। क्योंकि जनता इस समय एंग ली द्वारा निर्देशित फिल्म लाइफ ऑफ पाई के मुख्य किरदार पाई की भांति खड़ी है जहां उसे सूचना के बवंडर से स्वयं बचना होगा आज के समय में वही उम्मीदवार जनता का पसंदीदा बन जाता है जो सोशल मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुंच बनाता है क्योंकि जो दिखाता है वही बिकता है, इसी बाजार की रणनीति को आज सभी राजनीतिक पार्टियां अपना रही हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि विज्ञापन को जांचने व परखने के लिए कई जांच एजेंसियां व प्रतियोगी कंपनियां अन्य कंपनियों के खिलाफ भ्रामकता के आधार पर कोर्ट का दरवाजा खटखटा सकती हैं। इसका हालिया उदाहरण देखने को मिला कि सुप्रीम कोर्ट ने पतंजलि को भ्रामक विज्ञापन देने के लिए फटकार लगाई और इसके साथ-साथ इस कंपनी के खिलाफ याचिकाकर्ता इंडियन मेडिकल एसोसिएशन को भी आड़े हाथों लिया। कोर्ट ने एलोपैथी डॉक्टरों द्वारा मरीजों को कथित तौर पर महंगी और गैर जरूरी दवाएं लिखने पर नाराजगी जताई है। इस मुद्दे से कोर्ट का जनता के शरीर पर पडने वाले नकारात्मक असर का चिंतन तो उजागर होता है, लेकिन हर दिन सोशल मीडिया पर दिखाए जाने वाले कंटेंट का लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर पडने वाले नकारात्मक प्रभाव की जिम्मेवारी कौन लेगा? इन दिनों चुनावी समय में तो हर राजनीतिक पार्टी स्वयं भी और इंफ्लुएंसर के माध्यम से देश के हर तबके तक पहुंचने के लिए प्रभावी सामग्री का प्रयोग अनिवार्य रूप से कर रही है। यह सामग्री कितनी सही है और कितनी गलत, इसके लिए न तो कोई सरकारी मशीनरी है और न ही कोई एजेंसी। हालांकि चुनाव आयोग सोशल मीडिया के माध्यम से चुनाव प्रसार संबंधित सामग्री को जांचने के लिए हर जिले व राज्य स्तर पर बनाए गए कंट्रोल रूम के माध्यम से मॉनिटरिंग कर रहा है, लेकिन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में सामग्री साधारण न होकर अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से भी बनाई जा रही है जिससे निपटना बेहद चुनौतीपूर्ण है। इसके अलावा चुनाव आयोग तो आचार संहिता लागू होने के बाद से ही एक्टिव हुआ है, लेकिन राजनीतिक पार्टियां पिछले एक साल से अपने प्रचार-प्रसार में जुट गई हैं। यह बात इससे सिद्ध होती है कि यह वर्ष शुरू होते ही चुनावों को देखते हुए देश की राजनीतिक पार्टियों ने पहले 2 से 3 महीनों में मेटा एवं गूगल विज्ञापन में 102.7 करोड़ खर्च कर दिए। वहीं भाजपा पिछले एक साल से सरल नाम की ऐप के जरिए जनता से संपर्क बनाने में लगी हुई है, जिसे लगभग 2.9 मिलियन लोग गूगल प्ले स्टोर के जरिए डाउनलोड कर चुके हैं। वहीं विपक्षी गठबंधन भी सामाजिक न्याय, किसान, युवा व बेरोजगारी जैसे मुद्दों को सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म से उठाकर बड़ा अभियान चला रहा है। लेकिन फिर सवाल सिर्फ इतना है कि इन पार्टियों द्वारा दी जा रही सूचना कितनी विश्वसनीय है? सोशल मीडिया के प्रति दीवानगी इतनी है कि डिजिटल सलाहकार फर्म केपियोस के मुताबिक दुनिया भर में 520 करोड़ लोग सोशल मीडिया की अलग-अलग साइट्स का प्रयोग करते हैं जिनकी संख्या सालाना 3 से 4 प्रतिशत बढ़ रही है। वहीं हमारे देश में आईआईएस रोहतक के एक अध्ययन के मुताबिक लगभग 62 प्रतिशत युवा जानकारी के लिए सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म उपयोग करते हैं जिनमें से एक पुरुष औसतन स्क्रीन पर 6 घंटे 45 मिनट और महिला 7 घंटे 5 मिनट व्यतीत करती है। यानी कि सोशल मीडिया ही सूचना का मुख्य स्त्रोत बन चुका है। इस संदर्भ में सूचना का प्रवाह और उसकी संरचना मानवीय व्यवहार पर प्रभाव डाल रही है। चुनावी समय में पार्टियां अन्य समय से दुगनी रफ्तार के साथ अपने ऑनलाइन सामग्री के माध्यम से जनता को जोडने की कोशिश करती हैं। जिस पार्टी की गति जितनी नवनीतम और तेज होती है वो उसी गति से नए वोटर व समर्थन हासिल करने में कामयाब हो जाती है। खास बात यह है कि इन सोशल मीडिया साइट्स के मालिक इस समय में नियंत्रण करने के बजाय मूकदर्शक बन जाते हैं क्योंकि यह समय पैसा बनाने का है। इस बिंदु पर न तो कोई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कानून उन्हें नियंत्रण कर सकने में सक्षम है। इस मौके का फायदा उठाकर पार्टियां अनियंत्रित तरीके से नियोजित वर्ग में किसी भी तरीके से अपनी पहुंच बढ़ाती हैं और उनके आईटी सैल जनता की भावनाओं को अपने पक्ष में करने की पूरी कोशिश करते हैं। सोशल मीडिया की एल्गोरिदम के कारण आपका हल्का सा भी झुकाव फेक न्यूज के जंजाल में फंसा देता है और जनता इको चैम्बर से बाहर ही नहीं निकल पाती। वो अभेद्य चक्रव्यूह बन जाता है जिसमें जनता बिना कुछ सोचे-समझे बस फंसती ही चली जाती है।

और रही-सही कसर डीपफेक वीडियो ने पूरी कर दी है जहां प्रसिद्ध व्यक्तियों को ढाल बनाकर कुछ गलत तत्व अपने उद्देश्यों को पूरा करने में लगे हुए हैं। इसका ताजा उदाहरण रणवीर सिंह एवं आमिर खान के साथ हुई घटना से पता लगता है। इन दुविधाओं का समाधान जनता की तार्किक सावधानी ही है, क्योंकि कोई सूचना जब अत्यधिक वेग, हिंसा व उत्तेजना पैदा करे तो शंकित होना लाजिमी है। कुछ देर ठहरिए और मन को शांत कर सोचिए। क्योंकि जनता के जुड़ाव के लिए असंख्य सूचना का ऐसा समुद्र खड़ा कर दिया गया है जिसमें तैरना स्वयं सीखना पड़ेगा। क्योंकि जनता इस समय एंग ली द्वारा निर्देशित फिल्म लाइफ ऑफ पाई के मुख्य किरदार पाई की भांति खड़ी है जहां उसे सूचना के बवंडर से स्वयं बचना होगा और अपने मानसिक विकास व उत्तरजीविता के लिए स्वयं सोचना होगा।

इलेक्ट्रानिक मशीन जायेगी तो फिर से होगा बूथ कैप्चरिंग

स्वाति

भारत गणराज्य 19 अप्रैल से 1 जून के बीच 18वें आमचुनाव की तैयारी कर रहा है जो विश्व का सबसे बड़ा चुनाव होगा, जब 96.88 करोड़ मतदाता अपने जनप्रतिनिधि का चयन करेंगे। इसके लिए चुनाव आयोग ने व्यापक इंतजाम किये हैं। लेकिन इस बीच एक बार फिर ईवीएम पर सवाल उठाकर एक समूह ने पूरी लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर ही सवालिया निशान लगाने की कोशिश की है। इस सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने एक्टिविस्ट अरुण कुमार की याचिका की सुनवाई करते हुए चुनाव आयोग और सरकार से वीवीपैट की सभी पर्चियों का मिलान ईवीएम में पड़े सभी वोटों से कराने की वास्तुस्थिति पर स्पष्टीकरण मांगा है। अभी की व्यवस्था में प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र के रैंडम पांच ईवीएम का ही वीवीपैट से मिलान होता है। याचिका के अनुसार इस कारण मतदाता के मन में प्रणाली को लेकर संदेह उत्पन्न होता है। साथ ही याचिका में कहा गया है कि मतदाता को वीवीपैट की पर्ची को खुद बैलेट बॉक्स में डालने की सुविधा मिलनी चाहिए। इससे चुनाव में गड़बड़ी की आशंका खत्म हो जाएगी और मतदाता यह देख लेगा कि उसका मत सही व्यक्ति को पड़ा है और यह गणना के लिए भी जाएगा। आगे यह बात भी उठाई गई है कि चुनाव आयोग 24 लाख वीवीपैट के लिए 5 हजार करोड़ खर्च कर चुकी है मगर सिर्फ 20,000 वीवीपैट का उपयोग समझ के परे है। न्यायालय ने सरकार और चुनाव आयोग को जवाब तलब तो किया है मगर क्या वाकई वीवीपैट की पर्ची से ईवीएम में पड़े वोट का रैंडम मिलान चुनाव प्रणाली के निष्पक्ष होने की गारन्टी नहीं दे पाता या ईवीएम हैक और वीवीपैट पर्ची से मिलान जैसे मुद्दे जानबूझकर उठाये जा रहे हैं ताकि जनता के मन में संदेह पैदा हो अभी पिछले साल सितंबर में भी एक याचिका सुप्रीम कोर्ट में आई थी जिसमें ईवीएम से चुनावी धांधली और गड़बड़ी की बात कही गई थी। मगर याचिका पर

न्यायालय ने फटकार ही लगाई थी कि हर कुछ दिनों में ईवीएम की गड़बड़ी का शिगूफा छोड़ना और भ्रम उत्पन्न करना गलत है। हालांकि चुनाव आयोग ने तब भी न्यायालय को बताया था कि ईवीएम बिना किसी कंप्यूटर या इंटरनेट नेटवर्क के स्वतंत्र रूप से काम करने वाली वन टाइम प्रोगामेबल चिप वाली मशीन है, जिससे हैकिंग या छेड़छाड़ असंभव है। आयोग ने बताया था कि अब तक सिर्फ 25 शिकायतें मिली हैं वो भी जांच के बाद झूठी पाई गई हैं। ईवीएम और वीवीपैट पर प्रश्न उठाने से पहले इसे समझना जरूरी है। वीवीपैट यानी वोटर वेरिफाइएबल पेपर ऑडिट ट्रेल एक मशीन होती है जो वोटिंग के समय बताती है कि वोटर ने किसे वोट दिया है। इसे इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन यानी ईवीएम से कनेक्ट किया जाता है। ईवीएम में मतदाता जिस भी पार्टी का बटन दबाता है, उसी पार्टी के चिह्न की पर्ची वोटर को वीवीपैट मशीन में दिखती है। वीवीपैट से निकलने वाली पर्ची सिर्फ वोटर को ही दिखती है। अब यह प्रणाली अभी रैंडम है तो भी क्या अब तक सभी 20,000 वीवीपैट पर्चियों का ईवीएम के वोटों से मिल जाना स्वयं में इसके निष्पक्षता का सबूत नहीं है रैंडम चुनाव तो फिर भी गड़बड़ियों की आशंका को कम करता है। सिलसिलेवार जब यही प्रक्रिया अपनाई जाने लगेगी और पर्चियों से ही वोटिंग की गिनती होने लगेगी तो इस बात की क्या गारंटी है कि तब विपक्ष यह आरोप नहीं लगाएगा कि पर्चियों को ही बदल दिया गया या फिर ईवीएम को ही रीसेट कर वोट को ही बदल दिया गया संदेह लाइलाज होता है। असंतुष्ट को कल्पवृक्ष भी संतुष्ट नहीं कर सकता। फिर भी ईवीएम के मामले में एक और बात समझने की जरूरत है। हाल ही जर्मनी की कोर्ट ने जर्मनी में ईवीएम के इस्तेमाल पर रोक लगा दी है। इसकी असलियत और कारण क्या है इसे समझने की जरूरत है। सबसे पहले यह बात समझना होगा कि यहां भी न्यायालय में दो याचिकाएं थी जिसमें एक ईवीएम के उपयोग को असंवैधानिक घोषित करने की थी और दूसरी ईवीएम के हैक होने की संभावना की वजह से इसको बैन करने की थी। जर्मन न्यायालय ने हैक करने वाली याचिका को खारिज किया और बेमानी बताया। वहां की अदालत ने इसके उपयोग को पूर्ण रूप से वर्जित नहीं किया है। हां न्यायालय ने जर्मन संविधान के अनुसार इसे कुछ आधार पर असंवैधानिक जरूर ठहराया है। न्यायालय ने कहा कंप्यूटर में पड़े मत को जनता नहीं देख पाती जो जर्मनी संविधान के कुछ अनुच्छेदों का उल्लंघन है। जापान ने इस प्रक्रिया को महंगा बता कर बंद किया जो बहुत बड़ा कारण भारत में भी वीवीपैट की अनुपलब्धता का है। जर्मनी और जापान दोनों देशों ने पारदर्शिता में अभाव को माना जिसका अर्थ वीवीपैट जैसे मशीनों से रैंडम क्रॉस वेरिफाई ना कर पाना है। नीदरलैंड के मामले में पारदर्शिता के अलावा मशीनों के भंडारण, परिवहन एवं सुरक्षा को लेकर नियमों का अभाव था। अमेरिका में ईवीएम का उपयोग लगभग न के बराबर है और वो मतपत्रों से मतदान को अपने रिच्युअल से जोड़ कर देखते हैं और परंपरा ऐसे ही रखना चाहते हैं। भारत में भी चुनाव आयोग ने इस बात को स्पष्ट किया है कि इन देशों में वीवीपैट जैसी किसी मशीन का उपयोग नहीं होता और बैन किए गए देशों में ईवीएम एक कम्प्यूटर और नेटवर्क से जुड़ा होता है जिसे हैक करना संभव है। हमें नहीं भूलना चाहिए भारत में मतपेटियों को लूटने का इतिहास रहा है। इसे ही रोकने के लिए ईवीएम को सुरक्षित विकल्प के तौर पर अपनाया गया था ताकि वोटों की लूट रोकी जा सके। आज भी बंगाल के पंचायती चुनाव में मतपेटियों की लूट के किस्से सरेआम हैं। ऐसे में क्या गारंटी है कि अगर ईवीएम को हटा दिया जाएगा तो पुनः बूथ कैप्चरिंग नहीं शुरु हो जाएगी देश की जनसंख्या इतनी है कि मतपत्र द्वारा वोट देना और उसकी गिनती करना एक थकाऊ और खर्चीली प्रक्रिया होगी। जो लोग जर्मनी, जापान और अमेरिका का उदाहरण दे रहे हैं वो लोग पड़ोस के पाकिस्तान को क्यों नहीं देख रहे हैं जहां सरेआम आज भी बैलट बॉक्स लूटकर मनमाना नतीजा निकाला गया है भारत की परिस्थितियां अमेरिका जैसी नहीं बल्कि पाकिस्तान जैसी ही हैं। यह ईवीएम ही है जिसने बदनाम बूथ कैप्चरिंग और वोटों की लूट पर रोक लगाई है। जो लोग बार बार इस पर सवाल उठा रहे हैं क्या वो फिर से बूथ कैप्चरिंग का रास्ता खोलना चाहते हैं

विश्व परिवार में शोक का अंधकार, सम्पादक श्री प्रवीण जैन दिवंगत

पंचतत्व में हुये विलीन, देश भर से श्रद्धांजलियों का तांता

तीन दशक से प्रकाशमान हो रहे रचनात्मक पत्रकारिता व जनसेवा का सूर्य हमेशा के लिये हुआ अस्त

सांसद ने निज निवास पर तो पूर्व केन्द्रीय मंत्री, पूर्व मंत्री व विधायक सहित तमाम समाजसेवियों ने मुक्तिधाम पर पहुंचकर दी श्रद्धांजलि

पूरे बुन्देलखण्ड का जैन समाज शोक में डूबा

अंतिम यात्रा में उमड़ा जनसमूह, हजारों नम आंखों ने दी अंतिम विदाई

झांसी (विश्व परिवार)। यह पंक्तियां लिखने के लिये भारी मन तथा नम आंखों से कलम उठानी पड़ रही है कि दैनिक विश्व परिवार झांसी के यशस्वी संपादक, देश के विभिन्न अंचलों में समाजसेवा में अलग ख्याति अर्जित करने वाले प्रवीण कुमार जैन ने कल रात्रि यकायक विदाई लेकर संपूर्ण विश्व परिवार एवं उनसे जुड़े देश भर के लाखों शुभचिंतकों को शोक के सागर में डुबो दिया। संपादक श्री प्रवीण कुमार जैन के कल रात्रि में हुए देहावसान से संपूर्ण विश्व परिवार अंधकार में छा गया है। श्री जैन के निधन का समाचार सुनते ही देश के विभिन्न अंचलों से उनके द्वारा किए गए जनकल्याणकारी कार्यों, समाज एवं पत्रकारिता की सेवा को याद करते हुए श्रृद्धाजंलियों का तांता लग गया।

उल्लेखनीय है कि कल रात्रि 9 बजे अचानक उन्हें हृदय में दर्द के साथ सांस लेने में परेशानी आई। बुंदेलखंड अस्पताल में उन्हें तत्काल उच्च चिकित्सा से चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई, लेकिन विधि के विधान के आगे संपूर्ण प्रयासों के बावजूद संपादक को नहीं बचाया जा सका। गत माह ही एक सड़क दुर्घटना में वह घायल हो गए थे एवं स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे थे कि अचानक कल रात्रि में यह सब घटित हो गया। कल का दिन उन्होंने श्री दिगंबर जैन मंदिर खरगोन जी में पूजन अभिषेक देखकर एवं समाज के इष्ट मित्रों के साथ समाजसेवी कार्यो के संचालन संपादन एवं विस्तार में लगाया। श्री दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष महेंद्र जैन जी दिल्ली से झांसी पधारे थे। उनका श्री प्रवीण जैन ने अपने निवास स्थान पर हार्दिक स्वागत व अभिनंदन किया एवं देशव्यापी समाजसेवी गतिविधियों की रूपरेखा एवं संचालन पर लंबा विचार विमर्श कर आगे की योजनाओं को संचालित करने का मार्ग तय किया था।

श्री प्रवीण जी श्री गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता उन्नयन समिति पत्रकार भवन के अध्यक्ष के साथ-साथ उत्तरांचल तीर्थ क्षेत्र कमेटी के कार्यवाहक अध्यक्ष के साथ-साथ विभिन्न राष्ट्रीय राज्य स्तरीय संस्थाओं के पदाधिकारी के रूप में विगत 35 वर्षों से अपनी सेवाएं निरंतर समर्पित करते चले आ रहे थे। उन्होंने अपना जीवन अपने आपमें एक संस्था के रूप में रखा एवं जनकल्याणकारी कार्यों के लिए, समाज, धर्म की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहे। जैन मुनि संघों की सेवा, आहार व्यवस्था, विहार व्यवस्था में वह सदैव अग्रणी रहते थे। उन्हें सभी मुनिजनों, माताजियों का आशीर्वाद प्राप्त होता था। श्री प्रवीण जैन छात्र जीवन से ही नेतृत्व की क्षमता रखते थे। उन्होंने समाज और समाज के बड़े-बड़े उपक्रमों को बुंदेलखंड में संचालित कराया। विभिन्न समाज सेवी संगठनों, संस्थाओं के माध्यम से समाज सेवी कार्य कर धर्म एवं समाज की सेवा की। श्री प्रवीण जैन दैनिक विश्व परिवार के संस्थापक स्वनामधन्य, कीर्ति शेष श्री कैलाश चंद्र जी जैन के द्वितीय सुपुत्र थे। उनके बड़े भ्राता श्री प्रदीप जैन संपादक दैनिक विश्व परिवार रायपुर, सदस्य प्रेस काउंसिल आफ इंडिया रहे। साथ ही उनके अनुज चिरंजीवी आलोक जैन दिगंबर जैन सोशल ग्रुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के पद पर रहकर धर्म, समाज की सेवा, पत्रकारिता क्षेत्र की सेवा में समर्पित रहे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राखी जैन भूगोल में डॉक्टरेट हैं। उनका बेटा चिरंजीव डॉक्टर यश दिल्ली में ऑर्थोपेडिक सर्जन है, जबकि छोटे पुत्र चिरंजीव अतिशय आईटी कंपनी में कार्यरत हैं। पुत्री स्तुति जैन उच्च शिक्षा दिल्ली में प्राप्त कर रही हैं।

लगभग तीन दशक से भी अधिक समय से पत्रकारिता एवं समाज सेवा के क्षेत्र में नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रहे दैनिक विश्व परिवार के संपादक, वरिष्ठ पत्रकार और समाजसेवा में उत्कृष्ट छाप छोड़ने वाले दैनिक विश्व परिवार के सम्पादक, उत्तरांचल जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री प्रवीण कुमार जैन का पार्थिव शरीर आज पंचतत्व में विलीन हो गया। उनके असामायिक निधन पर समाजसेवियों, व्यापारियों के अलावा पत्रकारिता जगत में शोक की लहर दौड़ गई। अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में जन समूह शामिल हुआ। वहीं, उनके निधन की खबर मिलते ही सांसद अनुराग शर्मा ने उनके निज निवास पर तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य, पूर्व विधायक रविन्द्र शुक्ल व सदर विधायक रवि शर्मा ने मुक्तिधाम पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की। अंतिम यात्रा में पूरे बुन्देलखण्ड का जैन समाज तथा जिले भर के पत्रकार शामिल हुये।

इस दौरान आयोजित शोकसभा में उनके द्वारा पत्रकारिता, समाज हित में किए गए सराहनीय कार्यों को याद कर उन्हे अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकार उन्नयन समिति के अध्यक्ष, दैनिक विश्व परिवार के प्रधान संपादक एवं पूर्व चेयरमैन नगर पालिका कीर्तिशेष स्व. श्री कैलाश चंद्र जैन के पुत्र, प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य श्री प्रदीप कुमार जैन के अनुज तथा श्री आलोक जैन के बड़े भाई, समाजसेवी, दिगंबर जैन समाज के पूर्व महामंत्री, पत्रकार भवन के कार्याध्यक्ष तथा उत्तरांचल जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री प्रवीण कुमार जैन का गत रात्रि आकस्मिक निधन हो गया था। इस खबर से समूचे पत्रकार जगत, समाज सेवी जगत और जैन समाज स्तब्ध रह गया। शोक की लहर के बीच आज सुबह से ही उनके निज निवास चन्द्रशेखर आजाद पर लोगों का तांता लगना शुरू हो गया। अंतिम यात्रा सोमवार की सुबह निज निवास चंद्रशेखर आजाद से उन्नाव गेट बाहर स्थित मुक्ति धाम के लिए रवाना हुयी, जहां उनका पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया। मुखाग्नि उनके बड़े सुपुत्र डॉक्टर यश जैन ने दी।

मुक्तिधाम पर आयोजित शोक सभा में उनकी सेवाओं को याद किया गया और अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई।

इस दौरान दैनिक जागरण के संपादक सुरेंद्र सिंह, वरिष्ठ पत्रकार शैलेन्द्र जैन, शीतल तिवारी, दीपक चंदेल, मुकेश वर्मा, अनंजय नेपाली, मोहन नेपाली, दीपक बट्टा, हरिकृष्ण चतुर्वेदी, विपिन साहू, विशाल त्रिपाठी, मोहम्मद फारुख, भाजपा नेता कमल सहगल, रविंद्र सिंह गौर, रिपुसूदन नामदेव, बालेंद्र गुप्ता, प्रभात साहनी, कुंदन सोलंकी, ज्ञानेश्वर कुशवाहा, आशीष द्विवेदी, धर्मेंद्र साहू, पवन झा, रानू, अख्तर खान, तारिक इकबाल शिबू, सूरज यादव, पंकज सक्सेना, साजिया खान, शशांक त्रिपाठी, देवेंद्र शुक्ला, व्यापारी नेता हैप्पी चावला, गुरजीत सिंह चावला, विवेक जैन, याकूब अहमद मंसूरी, मुकेश अग्रवाल, अशोक कनोजिया, पिंकी जैन, रामकिशन अकेला, इम्तियाज हुसैन, शैलेंद्र सिंह गौर, निलय जैन, कमल जैन, अनिल बट्टा, वैभव बट्टा, अरविंद वशिष्ठ, गौरव जैन, राकेश पाल, राहुल जैन, सुधांशु त्रिपाठी, दिलीप आदि पत्रकार, समाजसेवी तथा व्यापारी मौजूद रहे। झांसी सहित बुंदेलखंड के विभिन्न शहरों से जैन समाज के पदाधिकारीगण परिवारजन सगे संबंधी इष्ट मित्र उपस्थित रहे। सभी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

- पं. कृष्णचन्द्र शर्मा कन्या इंटर कॉलेज में हुयी शोक सभा में प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार जैन के छोटे भाई व दैनिक विश्व परिवार के सम्पादक श्री प्रवीण कुमार जैन के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।
- राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन हायर सेकेण्डरी स्कूल की शोक सभा में प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री प्रवीण कुमार जैन के निधन पर शोक व्यक्त करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।
- महाराजाधिराज झांसी राज्य श्रीमंत गंगाधर राव स्मृति समारोह समिति की अध्यक्ष पूर्व पार्षद अरूण द्विवेदी की अध्यक्षता में हुयी श्रद्धांजलि सभा में समिति के महामंत्री, बुन्देलखण्ड प्रेस वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष, श्री गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकार भवन के कार्याध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन पंचायत राष्ट्रीय महासमिति नई दिल्ली के तीर्थांचल कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारी, दैनिक विश्व परिवार के सम्पादक, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष कीर्तिशेष स्व. श्री कैलाशचन्द्र जैन के सुपुत्र तथा प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य श्री प्रदीप कुमार जैन के अनुज श्री प्रवीण कुमार जैन के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इस दौरान श्री जैन के निधन को पत्रकारिता जगत के लिये अपूर्णनीय क्षति बताते हुये उनके द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में किये गये रचनात्मक कार्यों पर प्रकाश डाला गया। बैठक में ओमप्रकाश तिवारी, कमल जैन पत्रकार, भरत राय, कृष्ण मुरारी राय, बसंत विष्णु गोलवलकर, नेहरू तिवारी, राजू तिवारी, मोहन तिवारी, महेन्द्र रावत, हरीश तिवारी, महेन्द्र श्रीवास्तव, दिलीप दुबे, आदर्श द्विवेदी, अनुज द्विवेदी, अशोक तिवारी, योगेश तिवारी, संतोष पाठक, विनोद तिवारी, जगमोहन मिश्रा, लोकेश जैन, अशोक अग्रवाल, राजेन्द्र हयारण, रवि तिवारी, संजय दोसाज, विजय नारायण तिवारी, राजेश जैन, हरीप्रकाश शर्मा, श्रीमती वंदना पाठक, इंदु वर्मा आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की। संचालन लखनलाल पुरोहित ने किया। संयोजन अब्दुल रसीद ने किया।

दैनिक विश्व परिवार झांसी के सम्पादक श्री प्रवीण जैन के आकस्मिक निधन पर श्रदांजलि सभा का आयोजन

विदिशा (विश्व परिवार)। सकल दिगम्बर जैन समाज विदिशा द्वारा दैनिक विश्व परिवार

झांसी के प्रधान सम्पादक श्री प्रवीण जैन के आक्समिक निधन पर श्रदांजलि सभा आचार्य श्री विनम्र सागर महाराज स संघ सानिध्य में आयोजित की गयी सभा का संचालन करते हुये महेंद्र पंडित जी ने कहा कि दैनिक विश्व परिवार ने हमेशा सभी मुनिसंघ की सेवा की है। जैन समाज के प्रवक्ता अविनाश जैन ने दैनिक विश्वपरिवार के प्रधान सपादक स्व. प्रवीण जैन को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये कहा स्वर्गीय प्रवीण जी का पूरा परिवार एक गुरु भक्त परिवार है एवं हमेशा से गुरु वाणी के रुप मे दैनिक विश्वपरिवार ने प्रवचनों को महत्व दिया है स्व प्रवीण जी दैनिक विश्वपरिवार रायपुर के प्रधान संपादक प्रदीप जैन के छोटे भाई थे। दिनांक 17 अप्रेल को उनके साथ एक सड़क दुर्घटना हो गयी थी वह ठीक भी हो गये थे लेकिन घर पर आने के उपरांत उनको अचानक तकलीफ हुई और देह परिवर्तन हो गया इस अवसर पर आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज के संघ सानिध्य में श्रदांजलि सभा आयोजित कर नौ बार णमोकार का पाठ कर मौन रखा गया।

मुनि श्री सुधासागर जी महाराज संघ का दमोह नगर आगमन पर हुई भव्य अगवानी

दीपक जगत के अंधकार को दूर करता है : मुनि श्री

दमोह (विश्व परिवार)। निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव108 श्री सुधासागर जी महाराज का संघ सहित दमोह नगर में मंगल आगमन हुआ। मंगल आगमन पर भव्य अगवानी समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों के साथ बड़ी संख्या में महिलाओं एवम बच्चों ने भी मंगल अगवानी में सहभागिता दी। गाजो बाजो के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने मुनि संघ का स्वागत किया मुनि श्री ने संघ सहित प्रात काल अनुग्राम से बिहार करते हुए धर्मपुरा नाका गढ़ी मोहल्ला पुराना थाना बकली चौराहा घंटाघर से होते हुए दिगंबर जैन धर्मशाला में आगमन हुआ। इस दौरान पूरे मार्ग में श्रद्धालुओ के द्वारा अपने-अपने घर के द्वारों को झंडों और बैनर से सजाया हुआ था।स्थान स्थान पर रंगोली सजाई गई। द्वार द्वार पर मुनि संघ की आरती उतारी गई एवं पद् प्रक्षालन किया गया।

समाज की विभिन्न महिला संगठनों ने अनेक स्थानों पर मंगल कलशो के साथ भव्य अगवानी की जैन धर्मशाला पहुंचने पर मुनि संघ मंदिर में दर्शन उपरांत मंच पर विराजमान हुए जहां पर सराफ परिवार के द्वारा मुनि श्री के पद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इस मौके पर मुनि श्री ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि दीपक जगत के अंधकार को दूर कर देता है। दीपक स्वयं जलता है, किंतु वह दूसरों को प्रकाशित कर देता है। आज अमावस्या है किंतु संतो के आगमन से यह महोत्सव में परिवर्तित हो जाती है। जिस तरह भगवान महावीर ने अमावस्या को मोक्ष प्राप्त कर इस जगत को मोक्ष महोत्सव मनाने का अवसर प्रदान कर दिया।भगवान को मोक्ष प्राप्त हुआ किंतु उनकेमोक्ष कल्याणक दिवस से हम सबको लाभ प्राप्त हुआ दीपक की ज्योति से हमें लाभ तभी प्राप्त हो सकता है जब हमारी आंख खुली हो नेत्रहीन के लिए प्रकाश का कोई महत्व नहीं। उन्होंने कहा संतो के सानिध्य से तभी लाभ हो सकता है जब हम उनके ज्ञान ज्योति से अपने जीवन को प्रकाशित कर पाएं जब निमित्त हमारे उपादान के लिए कार्यकारी हो जाएं तभीसार्थकता है।

उन्होंने दामों के विषय में बोलते हुए कहा कि दमोह वालों के भाग्य से हर साधु के लिए दमोह आना पड़ता है, क्योंकि आपके भाग्य से कुंडलपुर निकट है। दमोह के लिए साधु आता नहीं लाया जाता है। अब ऐसा पुरुषार्थ करो की साधु दमोह के नाम से दमोह आए। कुंडलपुर के लिए दमोह ना आए। सुनील वेजीटेरियन से प्राप्त जानकारी के साथ अभिषेकजैन लुहाड़िया रामगंजमंडी की रिपोर्ट। -**अभिषेकजैन लुहाड़िया**

श्री छत्तीसगढ़ लोहाणा महिला मंडल द्वारा नि:शुल्क छाछ वितरण कार्यक्रम

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री छत्तीसगढ़ लोहाणा महिला मंडल द्वारा आज दिनांक 08 मई 2024 को भारी गर्मी से राहत दिलाने राहगीरों को बुढ़ापारा के बिजली ऑफिस चौक में नि:शुल्क छाछ वितरण कार्यक्रम किया गया जिसमें शहर की प्रतिष्ठित कंपनी के छाछ के पाउच को ठंडा कर के वितरण कर के लगभग 2000 पेकेट वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में श्री छत्तीसगढ़ लोहाणा महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती रेखा रायचुरा, पुष्पा वर्मा, ज्योतिका मजीठिया, इंदिरा मजीठिया, पदमा मिरानी, नेहा माणेक, योगिता पुजारा आदि उपस्थित थे।

पाप का त्याग करोगे तो सुख शांति का अनुभव करोगे : आचार्य श्री विनम्र सागर जी महाराज

विदिशा (विश्व परिवार)। भीख मांगकर लाऐ हम चार दिनों का यह जीवन, कर ले तू इसको पावन कर ले तू इसको पावन कर ले जो कुछ करना है आज नहीं तो कल मरना है, पाप का त्याग करोगे तो सुख शांति का अनुभव करोगे। उपरोक्त उदगार आचार्य विनम्रसागर महाराज ने श्री शांतिनाथ जिनालय स्टेशन जैन मंदिर में व्यक्त किये उन्होंने कहा कि सुबह से लेकर शाम तक पुण्य तो बहूत इकट्ठा करते हो, भगवान की भक्ती करते हो अभिषेक पूजन और आहार भी देते हो जो पुण्य आपको चकृवती और कामदेव बना सकता था लेकिन धन संपत्ति व्यापार आदि बड़ाने में लगा देते हो तो धन संपत्ति की वृद्धि तो होती है लेकिन धर्म की वृद्धि नहीं होती उन्होंने कहा पुण्य का फल व्यापार धन संपत्ति आदि नहीं वल्कि संयम है और संयम स्वाध्याय करने से आता है।आचार्य श्री ने कहा कि दैने बाला तो दे रहा है, देता है तो छपपर फाड़ के और लेता है तो फरस उखाड़ के भगवान की पूजन अभिषेक करते समय आप जो भी विचार करोगे तो वह अवश्य पूरा होता है,पूजन के साथ स्वाध्याय करना चाहिये यदि आपने स्वाध्याय नहीं किया तो आपको पूजन का फल मिलने बाला नहीं, भगवान की पूजन दान किया प्रशंसा पाने के लिये समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये कभी मुनि बनने की भावना नहीं की,मुनि वही बन पाते है जो मुनि बनने की भावना रखते है पूजन के साथ साथ स्वाध्याय करना चाहिये यदि आपने स्वाध्याय नहीं किया तो आपको पूजन का फल तो मिलेगा लेकिन त्याग और वैराग्य से खाली रहोगे उन्होंने कहा शांति की खोज में तो लगे हो शांति घर में नहीं मिलती, शांति पाने के लिये घर का त्याग करना पड़ता है।स्वाध्याय का फल संयम है जिस दिन आप त्याग की महिमा को समझ जाओगे तो आपके घर में संपन्नता आयेगी ही आऐगी। -**अविनाश जैन**

संक्षिप्त समाचार

वी एसओसी2, टाईप2 अटेस्टेशन पाने वाला उद्योग जगत का पहला प्लेयर बना; उपभोक्ताओं के भरोसे एवं डेटा सुरक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की

मुंबई : जाने-माने दूरसंचार सेवा प्रदाता वोडाफ़ोन आइडिया (वी) ने आज बताया कि इसे एसओसी2 टाईप2 अटेस्टेशन मिला है। वर्तमान में यह भारत का एकमात्र दूरसंचार सेवा प्रदाता है, जिसने सफ्लतापूर्वक एसओसी2 टाईप2 अटेस्टेशन को पूरा कर लिया है। यह उपभोक्ताओं की संवेदनशील जानकारी एवं गोपनीयता को सुरक्षित रखते हुए तथा डिस्ट्रीब्यूटेड डेनियल-ऑफ- सर्विसेज़ (डीडीओएस) अटैक को कम करते हुए डेटा सुरक्षा के सर्वोच्च मानकों को बरक़रार रखने की वी की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। एआईसीपीए (एसोसिएशन ऑफइंटरनेशनल सर्टिफाईड प्रोफेशनल अकाउन्टेन्ट्स) के साथ रजिस्टर्ड स्वतन्त्र सीपीए और विस्ता इन्फोसेक द्वारा संचालित सख्त मूल्यांकन प्रक्रिया के बाद प्राप्त यह मान्यता एसओसी 2 'ट्रस्ट सर्विस' पर आधारित है, जिसके तहत मुख्य मानकों जैसे सुरक्षा, उपलब्धता, प्रोसेसिंग इंटेग्रिटी, गोपनीयता आदि पर उपभोक्ताओ के डेटा प्रबन्धन का मूल्यांकन किया जाता है। यह मान्यता इस बात की पुष्टि करती है कि कंपनी न सिर्फ जटिल सुरक्षा नीतियों के कार्यान्वयन मे सक्षम है बल्कि विस्तारित अवधि के लिए अनुपालन को भी प्रमाणित करती है। एसओसी2 टाईप2 ऑडिट इस बात की पुष्टि करता है कि वी का भीतरी नियन्त्रण, नीतियां एवं प्रक्रियाएं सुरक्षा एवं संचालन दक्षता के सर्वोच्च मानकों पर आधारित हैं। यह इस बात का संकेत है कि डीडीओएस सुरक्षा के सर्वोच्च स्तर के साथ सुरक्षा नियन्त्रण के लिए वी के पास सशक्त डिज़ाइन एवं संचालन दक्षता है। सुरक्षा के लिए किसी भी खतरे को यह तेज़ी से पहचान लेता है, ऐसे में यह सभी कारोबारों के लिए भरोसेमंद सेवा प्रदाता है। वी को 2022 में एसओसी टाईप1 अटेस्टेशन मिला थ, जिसने यह स्पष्ट किया कि वी द्वारा उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराई जाने वाली सेवाएं पूरी तरह से सुरक्षित और नियमों के अनुरूप हैं। अब एसओसी2 टाईप 2 अटेस्टेशन इस बात की पुष्टि करता है कि कंपनी लगातार सुरक्षा प्रक्रियाओं का अनुपालन कर रही है, जिसका मापन 6 से 12 महीनों की अवधि के लिए किया गया है।

बीई/बीटेक प्रोग्राम्स में एकेडमिक एक्सीलेंस दे रहा थापर इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी

रायपुर। थापर इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (डीम्ड यूनिवर्सिटी) में बीई/बीटेक एडमिशन 2024 के लिए एप्लीकेशन शुरू हो चुके हैं। ये एडमिशन जेईई मेन 2024 की आल इंडिया रैंक और 12वीं की पीसीएम मेरिट को ध्यान में रखकर दिए जा रहे हैं। लेटरल एंट्री एडमिशन 10वीं के बाद तीन साल का डिप्लोमा या 12वीं के बाद दो साल का डिप्लोमा करने वाले छात्रों को दिया जाता है। इन छात्रों के लिए न्यूनतम अंकों की आवश्यकता 60त्न (अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए 55त्न) होती है। संस्थान की अलग अलग ब्रांच में 3,000 से अधिक सीटों उपलब्ध है। छह दशक से अधिक समय से रिसर्च एक्सीलेंस की विरासत के साथ और भारत में प्रमुख इंजीनियरिंग संस्थानों (नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क) में 20वें स्थान पर रैंकिंग प्राप्त करने के साथ, टीआईईटी इंजीनियरिंग के उन छात्रों के लिए एक प्रमुख और पसंदीदा जगह है जो एकेडमिक एक्सीलेंस की तलाश में है। टीआईईटी एकेडमिक एक्सीलेंस के लिए पूरी तरह से समर्पित है, योग्य छात्रों को मेरिट और आर्थिक सहायता छात्रवृत्ति के माध्यम से पर्याप्त समर्थन प्रदान करता है। पिछले साल, यह समर्थन राशि 32 करोड़ रुपये से अधिक थी, जिसने उच्च शिक्षा के अपने सपनों का पूरा करने वाले छात्रों को और सशक्त बनाया। इसके अलावा, इंटरनेशनल इंजीनियरिंग प्रोग्राम (आईईपी) छात्रों को दुनिया भर में प्रसिद्ध पार्टनर यूनिवर्सिटी जैसे ट्रिनिटी कॉलेज डबलिन, यूनिवर्सिटी ऑफ क्वींसलैंड, वर्जीनिया टेक, तल अवीव यूनिवर्सिटी और न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी में आसानी से स्थानांतरित करने का अवसर प्रदान करता है। थापर इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के डायरेक्टर डॉ. पद्मकुमार नायर इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी की बदलती प्रकृति पर प्रकाश डालते हैं और हमारे चारों ओर लगातार बदलते और डायनामिक वर्ल्ड को अपनाने की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हैं। वह छात्रों को यह समझने के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि शिक्षा खुद को जानने, बौद्धिक विनम्रता प्राप्त करने और आखिर में एकेडमिक एक्सीलेंस की यात्रा में शामिल होना ही जीवन जीने की तैयारी है। इंजीनियरिंग में अपने फ्लैगशिप प्रोग्राम्स के अलावा, टीआईईटी विभिन्न प्रकार के एकेडमिक प्रोग्राम देता है, जिनमें थापर स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स एंड साइंसेज में स्नातक कार्यक्रम बीबीए/बीए/बीएससी/बीकॉम, स्नातकोत्तर कार्यक्रम एमई/एमटेक, एमएससी, एमए, एमबीए और डॉक्टरेट कार्यक्रम शामिल हैं।

बिलासपुर के शहरवासियों को जल्द ही मिलेगी एक नई सड़क

पूर्व में इसके लिए हटाया गया था अतिक्रमण

बिलासपुर(विश्व परिवार)। महावीर नगर चौक से उसलापुर ओवरब्रिज तक जल्द ही शहरवासियों को एक नई सड़क की सौगात मिलने वाली है। निगम कमिश्नर अमित कुमार के निर्देश पर मिनोचा कालोनी के पास बन रही सड़क के डामरीकरण का कार्य तेजी के साथ किया जा रहा है, जो लगभग पूरा होने की स्थिति में बिलासपुर के शहरवासियों को जल्द ही मिलेगी एक नई सड़कबिलासपुर के शहरवासियों को जल्द ही मिलेगी एक नई सड़क उसलापुर रोड में मिनोचा कालोनी के समीप महावीर नगर चौक से उसलापुर ओवरब्रिज तक बिलासपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा 900 मीटर नई सड़क बनाई जा रही है। इससे पहले सड़क के किनारे नाली बनाने का काम पूरा किया जा चुका है। उसलापुर मुख्य मार्ग व नई बन रही सड़क के बीच डिवाइडर भी तैयार किया जा चुका है बिलासपुर में चुनाव की तैयारियां पूरी, अर्धसैनिक बल ने संभाला मोर्चाबिलासपुर में चुनाव की तैयारियां पूरी, अर्धसैनिक बल ने संभाला मोर्चा इस नई सड़क में स्ट्रीट पोल पहले से ही लगाई जा चुकी है। इस नए सड़क के शुरू हो जाने से गौरव पथ की ओर से आने वाले सभी वाहन इस सड़क के जरिए सीधे ओवरब्रिज पहुंच सकेंगे। उसलापुर रोड का हैवी ट्रैफिक कम और सुव्यवस्थित होगा। इससे राहगीरों को काफी राहत मिलेगी। सालभर पहले इस मार्ग में करीब 23 लोगों के द्वारा अवैध कब्जा कर लिया गया था। इसका सीमांकन कर नगर निगम ने यहां के अतिक्रमण को हटाने की कार्रवाई कर सड़क निर्माण में आने वाले सभी अड़चनों को दूर किया था। शहर के ह्रदय स्थल पर लोगों द्वारा किए गए अतिक्रमण से बेशकीमती और महत्वपूर्ण जमीन का लाभ शहरवासियों को नहीं मिल पा रहा था। लेकिन अब सभी प्रकार की बाधाएं हटने के बाद शहरवासियों को इस सड़क पर चलने पर किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। सड़क निर्माण का काम अंतिम चरण में पहुंच चुका है। सड़क बनने के साथ ही स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत सड़क के दोनों किनारे की सुंदरता बढ़ाने का भी निर्णय लिया गया है। इसके तहत सड़क के दोनों ओर को हरा-भरा बनाया जाएगा। साथ ही सुंदर कलात्मक चीजें भी बनाई जाएगी। इसके साथ ही फाउंटेन आदि भी लगाया जाएगा। इससे इस सड़क की सुंदरता पर चार-चांद लग जाएगा।प्लान के तहत मंगला चौक से उसलापुर ओवरब्रिज तक की सड़क बनाई जा रही है। यह सड़क 80 फीट तक चौड़ी रहेगी। सालों से इस सड़क के किनारों पर कब्जा होने की वजह से ऐसा संभव नहीं हो पा रहा था, लेकिन अब बाधाएं खत्म होने के बाद चौड़ी सड़क की सुविधा मिलने के बाद मंगला चौक में लगने वाले जाम से मुक्ति मिल जाएगी।

शारदा विहार के मकान में आईपीएल मैच सट्टा का लगा था सेटअप, गिरोह का भंडाफोड़

कोरबा(विश्व परिवार)। सक्ती पुलिस ने आईपीएल क्रिकेट में ऑनलाइन सट्टा खिलाने वाले गिरोह के एक बुकी और 4 सटोरियों को गिरफ्तार किया है। सक्ती निवासी बुकी कोरबा के शारदा विहार के एक मकान से सेटअप चलाते हुए पकड़ा गया जिसे उसने किराए पर लेकर रखा था। सक्ती थाना प्रभारी निरीक्षक विवेक शर्मा ने बताया कि सक्ती में जुआ और सट्टा के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही है। जिसके चलते अब सट्टा कारोबारी शहर से बाहर जाकर दूसरे जिलों से सट्टे के अवैध कारोबार का संचालन कर रहे हैं। सक्ती में सटोरियों के सक्रिय होने की सूचना पर शुक्रवार को सक्ती पुलिस की टीम ने ग्राम नगरदा के युवक दूजराम को हिरासत में लिया। जो मोबाइल से ऑनलाइन दांव लगवा रहा था। पूछताछ करने पर उसने सोंठी निवासी विमल दास के अधीन काम करना बताया, जो सट्टा के खेल में खाईवाली करता है। पुलिस टीम ने उसे पकड़ा तो उसने सोंठी के ही एक अन्य व्यक्ति शिवम दास द्वारा सट्टे का बड़ा कारोबार करना और उसके लिए बुकिंग एकत्रित करना बताया। उसने यह भी बताया कि शिवम दास कोरबा में किराए का मकान लेकर वहां से सट्टे का ऑनलाइन कारोबार चला रहा है। पुलिस टीम सक्ती से कोरबा पहुंची और बताए गए लोकेशन शारदा विहार कोरबा के एक मकान में दबिश दी। जहां आईपीएल मैच के दौरान मोबाइल और लैपटॉप के जरिए ऑनलाइन सट्टा खिलाते हुए शिवम दास को पकड़ा गया। उससे पूछताछ करने पर उसने सक्ती निवासी राहुल अग्रवाल के लिए बुकी का काम करना बताया। पुलिस ने राहुल अग्रवाल को भी पकड़ लिया। मामले में आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

नाबालिग बालिका से छेड़छाड़ करने वाला आरोपी गिरफ्तार

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। नाबालिग से छेड़छाड़ करने तथा धमकी देने वाले एक आरोपी को घुमका थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मामले में आरोपी को विरू द्ध पाक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। मिली जानकारी के अनुसार सोमवार को एक नाबालिग बालिका ने लिखित आवेदन दिया कि आरोपी गोविंदा कोसरे निवासी गिधवा के द्वारा दिनांक घटना 29 अप्रेल के मध्य रात्रि उसके घर के छत पर जाकर छेड़छाड़ कर जान से मारने की धमकी दिया है व पीड़िता ने जब रिपोर्ट लिखाने पुलिस थाना जा रही थी तब पुनः आरोपी द्वारा पीड़िता को बलपूर्वक रोका गया था। पीड़िता के लिखित आवेदन पर से सोमवार को थाना घुमका में आरोपी गोविंदा कोसरे के विरूद्ध धारा 354, 354(क),354(घ), 456, 506,509, 341 भादवि. 8,10,12 पाक्सों एक्ट कायम कर विवेचना में लिया गया प्रकरण नाबालिग बालिका एवं महिला संबंधित होने से उक्त घटना क्रम की सूचना वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को दी गई जिस पर प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा, अनुविभागीय पुलिस अधिकारी डोंगरगांव दिलीप सिसोदिया के निर्देशन में थाना प्रभारी घुमका निरीक्षक विनय कुमार पम्मार के नेतृत्व में तत्काल घुमका पुलिस के द्वारा आरोपी को ग्राम गिधवा से सोमवार को ही गिरफ्तार कर न्यायालय राजनांदगांव में पेश किया गया।

भारी वाहन की टक्कर से कन्वेयर बेल्ट पोल क्षतिग्रस्त, कोयला आपूर्ति बाधित

कोरबा(विश्व परिवार)। दर्री मुख्य मार्ग पर एक भारी वाहन की टक्कर से छत्तीसगढ़ इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के 840 मेगावाट क्षमता वाले हसदेव थर्मल पावर प्लांट की कन्वेयर बेल्ट लाइन का पोल बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। बिजली कंपनी का कामकाज इस वजह से बाधित हुआ और उसे लाखों का नुकसान भी हुआ है। ट्रक चालक की लापरवाही के कारण यह हादसा यहां पर हुआ। वहां की रफ्तार कितनी ज्यादा थी इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है की टक्कर के कारण जहां वाहन के परखच्चे उड़ गए, वहीं पोल की दुर्गति हो गई। जिस स्थान पर यह हादसा हुआ है उसके ठीक ऊपर से बिजली उत्पादन कंपनी के लिए कोयला भेजने वाली कन्वेयर बेल्ट प्रणाली गई हुई है। गनीमत ये रही कि लाइन का स्ट्रक्चर नही गिरा, वरना लेने के देने पड़ जाते। घटनाक्रम के कारण एसईसीएल कुसमुंडा से एचटीपीएस प्रोजेक्ट को की जाने वाली कोयला आपूर्ति पर काफी असर पड़ा है। इस हादसे को लेकर पुलिस के द्वारा वाहन के चालक के खिलाफ अपराध पंजीबद किया गया है। बिजली कंपनी को जो कुछ नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई के लिए अगली कार्यवाही करने की बात भी कहीं जा रही है।

ई-संजीवनी कंसल्टेन्सी बना मरीजों का हमदर्द

केवल एक वीडियो कॉल से मरीजों को मिल रही है उचित चिकित्सकीय परामर्श

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। जिला मुख्यालय के जिला अस्पताल में विगत दो महीनों से प्रारंभ हुई टेलीमेडिसिन की नवीन पहल। जिसे ''ई-संजीवनी साथी'' कहा जा सकता है। वास्तव में दूर दराज के मरीजों के लिए एक हमदर्द साबित हो रहा है। केवल एक वीडियो कॉल के माध्यम से चिकित्सकों द्वारा मरीजों से सीधे रूबरू होकर उनके शारीरिक व्याधियों के लक्षणों को सुना जाता है और बीमारियों का सूत्र पकड़ते हुए उचित औषधियों के सेवन का परामर्श, परहेज अथवा सीधे अस्पताल आने की सलाह दी जाती है। इस चिकित्सकीय वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का सबसे बड़ा लाभ उन मरीजों एवं उनके परिजनों को हो रहा हैं जो दूर दराज के क्षेत्रों में निवास करते है और तुरन्त जिला अस्पताल नहीं पहुंच सकते। टेलीमेडिसिन के जरिये जिला अस्पताल के चिकित्सक प्रतिदिन दो घंटे के लिए मरीजों हेतु उपलब्ध रहते है जहां उन्हें 40 से अधिक ग्रामीण प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों से विडियो कॉल मिलती है और वे लोगों को सीधे चिकित्सकीय परामर्श देते है। और मरीजों को रोगों की गम्भीरता का पता चलने के साथ-साथ और उन्हें समय पर उचित इलाज कराने का विकल्प मिल जाता है। इस सुविधा के प्रारंभ होने से ग्रामीण क्षेत्रों के मरीजों को सीधे अस्पताल आने की जरूरत नहीं पड़ती है और वे समय रहते उपचार प्रारंभ करा सकते है। इसके साथ ही उन्हें अस्पताल आने जाने के खर्चे, दूरी, समय की बचत, जैसी सुविधाएं होने के साथ-साथ अस्पताल में भीड़ से हो रही असुविधा का भी सामना नहीं करना पड़ रहा है। इस संबंध में ग्रामीणों द्वारा अपने निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ), ग्रामीण स्वास्थ्य संयोजक (आरएचओ) से सम्पर्क किया जाता है जहां जिला अस्पताल द्वारा उपलब्ध कराये गये लिंक के माध्यम से जिला अस्पताल सम्पर्क साधा जाता है और उपलब्ध चिकित्सक मरीजों से मश्वरा करते है। तत्पश्चात चिकित्सको के परामर्श अनुसार उप स्वास्थ्य केन्द्र में पदस्थ एएनएम एवं सीएचओ द्वारा मरीजों को निशुल्क दवाई दी जाती हैं। इस संबंध में अस्पताल में उपस्थित टेली कंसल्टेन्सी सुश्री पूजा डे एवं आरएमए शत्रुघन सोनी ने बताया कि जिला प्रशासन की इस पहल से विडियो कॉल के माध्यम से कई मरीजों की बीमारियों की स्थिति का पता समय से पूर्व पता चलने के साथ-साथ उपचार कराने का पर्याप्त समय मिल रहा है।

सुदूर वनांचल सहित मैदानी क्षेत्रों में पेयजल व्यवस्था सुनिश्चित करें : कलेक्टर

कवर्धा(विश्व परिवार)। कलेक्टर महोबे ने आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में अधिकारियों की बैठक लेकर जन सामान्य से संबंधित विभिन्न समस्याओं, मांग और शिकायतों के कंप्लायंस की समीक्षा की। कलेक्टर महोबे ने कहा कि विभिन्न विभागों को आम नागरिकों की समस्या और शिकायते प्राप्त होती है, वे सभी विभाग निर्धारित समय में प्रकरणों का निराकरण करना सुनिश्चित करें। इसके साथ ही राजस्व के लंबित प्रकरणों का समय सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले सहित स्थानीय स्तर के सभी कार्यालय निर्धारित कार्यालयीन समय में संचालित करने और सभी नागरिकों के समस्याओं का समाधान करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने ग्रीष्म ऋतु मौसम को ध्यान में रखते हुए जिले में लू से बचाव और आवश्यक तैयारी के जिए अधिकारियों को निर्देश दिए है। बैठक में अपर कलेक्टर अविनाश भोई, संयुक्त कलेक्टर डॉ. मोनिका कौढ़ौ, आलोक श्रीवास्तव, कवर्धा एसडीएम अनुपम टोप्पो, पंडरिया संदीप ठाकुर, डिप्टी कलेक्टर गीता रायस्त, आरबी देवांगन, लेखा अजगल्ले, आकांक्षा नायक सहित जिला अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर महोबे ने कहा कि अधिक गर्मी के कारण अनेक गांव में जल स्तर कम हुआ है, इन सभी गांवों का चिन्हांकन करते हुए पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि किसी भी गांव में पेयजल की समस्या नही होनी चाहिए। सभी को पेयजल उपलब्ध कराना हमारी जिम्मेदारी है। जिले के सुदूर वानांचल क्षेत्रों में अधिक ध्यान देने की जरूरत है। सीईओ जनपद, राजस्व और पीएचई विभाग के अधिकारी संयुक्त रूप से गांव में पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करें। उन्होंने पेयजल से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या आने पर तत्काल निदान करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने फसल नुकसान होने वाले किसानों के आरबीसी 6-4 के तहत तथा फसल बीमा के अंतर्गत मिलने वाली राशि के संबंध में जानकारी ली। कृषि विभाग के उप संचालक ने बताया की ओला एवं बे मौसम बारिश से प्रभावित फसलों की बीमा की राशि 3 करोड़ 39 लाख रुपए की राशि बीमा कंपनी द्वारा किसानों के खाते में भुगतान किया जा चुका है। शेष राशि भी जल्द ही भुगतान कर दिया जाएगा। कलेक्टर महोबे ने कहा कि 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिन विशेष अभियान चलाकर वृहद रूप से पौधरोपण किया जाना है। उन्होंने वन विभाग के अधिकारी को इसके लिए कार्य योजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्कूल शिक्षा विभाग के ग्रीष्म कालीन अवकाश की कार्य योजना की जानकारी लेते हुए कहा कि विद्यार्थियों के उचित मार्गदर्शन के लिए कवर्धा के लाइब्रेरी में काउंसलिंग सेंटर प्रारंभ किया जाए। जहां विद्यार्थियों को बेहतर भविष्य के लिए जानकारी मिल सके इसके साथ ही मोटिवेट होकर अपने आगे की पढ़ाई जारी रखें। उन्होंने कहा कि लाइब्रेरी की व्यवस्था भी बेहतर रखे और विद्यार्थियों को इसके लिए प्रेरित करें। ताकि ग्रीष्म कालीन समय में भी लाइब्रेरी का उपयोग कर सके।

सूर्या ने मैच विजयी शतकीय पारी के बाद कहा, 'मुझे अंत तक खेलने की जरूरत थी

मुंबई । मुंबई इंडियंस ने सनराइजर्स हैदराबाद को आईपीएल मुकाबले में 7 विकेट से मात दी। मुंबई के एक समय मैच में 31 रन पर 3 विकेट गिर गए थे लेकिन इसके बाद सूर्यकुमार यादव की शतकीय पारी ने टीम को एक आसान जीत दिलाई।

हैदराबाद ने वानखेड़े स्टेडियम में पहले खेलते हुए 173-8 का स्कोर खड़ा किया था। जवाब में एमआई ने रोहित (4), ईशान (9) और नमन (0) के विकेट जल्दी खो दिए।

सूर्यकुमार ने 51 गेंदों में नाबाद 102 रन बनाए और तिलक वर्मा (32 गेंदों में नाबाद 37 रन) के साथ 143 रन की साझेदारी की, जिससे एमआई 17.2 ओवर में 174/3 पर पहुंच गया।

सूर्यकुमार यादव ने मैच के बाद कहा कि मैं बहुत लंबे समय के बाद ऐसा कर रहा हूं। यह 14 दिसंबर के बाद पहली बार है जब मैंने 20 ओवर तक फील्डिंग और 18 ओवर तक बल्लेबाजी की।

उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि मेरे लिए इस तरह की पारी खेलकर टीम को जीत दिलाना समय की मांग थी। तीन विकेट गिर चुके थे और मुझे अंत तक खेलना था।

हालांकि उन्हें अपनी पारी के दौरान थोड़ा परेशान देखा गया था, लेकिन दुनिया के शीर्ष टी20 बल्लेबाज ने कहा कि ऐसा केवल थकान के कारण था क्योंकि वह लंबे समय से मैदान पर थे। सूर्यकुमार आईपीएल सीजन के पहले कुछ मैचों में नहीं खेल पाए थे क्योंकि दिसंबर 2023 में दक्षिण अफ्रीका सीरीज के दौरान उन्हें चोट लग गई थी और बाद में जर्मनी में स्पोर्ट्स हर्निया की सर्जरी हुई थी।

सूर्यकुमार ने कहा, मैं बहुत लंबे समय के बाद ऐसा कर रहा हूं। 14 दिसंबर के बाद यह पहली बार है जब मैंने 20 ओवर तक फील्डिंग की और 18 ओवर तक बल्लेबाजी की। मैं केवल थकान महसूस कर रहा था। लेकिन मैं ठीक हूं।

भारतीय क्रिकेट प्रशंसक प्रार्थना कर रहे होंगे कि वह अगले कुछ महीनों में भी इसी तरह बल्लेबाजी करते रहें क्योंकि आईपीएल के तुरंत बाद टी20 विश्व कप शुरू होगा, और अगर भारत को वर्ल्ड कप जीतना है तो सूर्यकुमार को टीम के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

व्यापार समाचार

अप्रैल में भारत की सेवा गतिविधियों की वृद्धि दर 14 साल में सबसे तेज

नई दिल्ली(एजेंसी)। देश के सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर अप्रैल में थोड़ी कम रही, लेकिन इस दौरान अनुकूल आर्थिक हालात और मजबूत मांग के बीच नये कारोबार और उत्पादन की वृद्धि 14 साल में सबसे तेज रही। एचएसबीसी इंडिया सर्विसेज बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्स मार्च के 61.2 से गिरकर अप्रैल में 60.8 पर आ गया। सर्वेक्षण के सदस्यों ने उत्पादन में ताजा तेजी के लिए अनुकूल आर्थिक परिस्थितियों, मांग में मजबूती और नए काम बढ़ने को जिम्मेदार बताया। परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) की भाषा में सूचकांक का 50 से ऊपर रहना विस्तार को दर्शाता है जबकि 50 से नीचे रहना संकुचन को दर्शाता है। एचएसबीसी के मुख्य भारतीय अर्थशास्त्री प्रांजल भंडारी ने कहा, %नए ऑर्डरों में और तेजी से भारत की सेवा गतिविधियां अप्रैल में थोड़ी नरम गति से बढ़ीं। इस दौरान घरेलू मांग में तेजी के अलावा, फर्मों ने दुनिया के कई हिस्सों से नए व्यापार लाभ का उल्लेख किया। सितंबर 2014 में पीएमआई सीरीज शुरू होने के बाद से अंतरराष्ट्रीय बिक्री में दूसरी सबसे तेज वृद्धि दर्ज की गई।हालांकि, कई कंपनियों ने संकेत दिया कि वर्तमान आवश्यकताओं के लिए पेरोल संख्या पर्याप्त थी, और नौकरी सृजन की दर पिछले वित्तीय वर्ष के अंत में देखी गई तुलना में मामूली और नरम थी। भंडारी ने कहा, %नए ऑर्डर बढ़ने के कारण कंपनियों ने अपने कर्मचारियों का स्तर बढ़ाया, हालांकि नियुक्तियों में वृद्धि की रफ्तार सुस्त रही।कीमत के मोर्चे की बात करें तो मजदूरी के दबाव और उच्च खाद्य कीमतों कारण लागत में इजाफा हुआ, जिसका भार फर्मों ने आंशिक रूप से अपने ग्राहकों पर डाला। भंडारी ने कहा, %इनपुट कॉस्ट लगातार तेजी से बढ़ रही है, हालांकि यह मार्च की तुलना में धीमी है, लेकिन इससे सर्विस फर्म्स के मार्जिन में कमी आई है। कीमतों के बढ़ने से इसके एक हिस्से का भार फर्मों ने ग्राहकों पर डाला है। एचएसबीसी इंडिया कंपोजिट पीएमआई आउटपुट इंडेक्स अप्रैल में 61.5 तक पहुंच गया, जो मार्च में 61.8 था। नवीनतम रीडिंग 14 वर्षों में सबसे अधिक रही और यह निजी क्षेत्र में विस्तार की पर्याप्त दर का संकेत है।

सिप्ला-ग्लेनमार्क ने अमेरिका से दवाएं वापस मंगाईं, ये है वजह

नई दिल्ली(एजेंसी)। दवा निर्माता कंपनी सिप्ला और ग्लेनमार्क ने विनिर्माण संबंधी समस्याओं के कारण अमेरिकी बाजार से अपनी दवाएं वापस ले लीं हैं। अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (यूएसएफडीए) की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, न्यू जर्सी में सिप्ला की सहायक कंपनी इप्राट्रोपियम ब्रोमाइड और एल्ब्युटेरोल सल्फेट इनहेलेशन सॉल्यूशन के 59,244 पैक वापस ले रही है। अमेरिकी स्वास्थ्य नियामक ने कहा, रिस्प्यूल्स में कम मात्रा भरने और थैली में कुछ लिक्विड देखे जाने की शिकायतें मिलीं।' वापस मंगाई गई दवाओं का उपयोग अस्थमा, क्रोनिक ब्रोंकाइटिस और वातस्फीति सहित फेफड़ों की बीमारियों को नियंत्रित करने में किया जाता है। यूएसएफडीए ने उल्लेख किया है कि ग्लेनमार्क डिल्टियाज़ेम हाइड्रोक्लोराइड की 3,264 बोतलें वापस ले रहा है। इस दवा का उपयोग उच्च रक्तचाप के इलाज के लिए किया जाता है। कंपनी की अमेरिका स्थित शाखा, ग्लेनमार्क फार्मास्यूटिकल्स ने देश भर से दवा को वापस लेने की शुरुआत की। अमेरिकी स्वास्थ्य नियामक के अनुसार दवा बनाने वाली कंपनी ल्यूपिन ने अमेरिकी बाजार से अपनी दवाओं को वापस ले लिया है। ल्यूपिन ने अमेरिकी बाजार में एंटीबायोटिक दवा रिफैम्पिन कैप्सूल (300 मिलीग्राम) की 26,352 बोतलें वापस मंगाईं।

रद्द उड़ानों का टिकट बेचने के आरोप में कंतास एयरलाइन पर गिरी गाज

नई दिल्ली(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया की प्रमुख एयरलाइन क्वांटास एयरवेज पहले से रद्द हो चुकी उड़ानों के लिए टिकटों की बिक्री से जुड़ा मुकदमा को निपटाने को तैयार हो गया है। एयरलाइन ने इसके लिए 120 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर यानी 7.9 करोड़ अमेरिकी डॉलर का भुगतान करने पर सहमति दे दी। एयरलाइन 100 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर या 6.6 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि जुर्माने के रूप में देगी वहीं 86,000 से अधिक ग्राहकों को 20 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर यानी 1.3 मिलियन अमेरिकी डॉलर मुआवजे के रूप में दिया जाएगा। यह मामला 2021-2022 का है। ऑस्ट्रेलियाई प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता आयोग की अध्यक्ष जीना कैस-गॉटलिब ने सोमवार को एक बयान में कहा, क्वांटास का आचरण अहंकारी और अस्वीकार्य था। कई उपभोक्ताओं ने एक ऐसे विमान की बुकिंग कर छुट्टी, व्यापार और यात्रा की योजना बनाई होगी, जिसे पहले ही रद्द कर दिया गया था। उन्होंने कहा कि हम यह कार्रवाई इसलिए सुनिश्चित कर रहे हैं क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में काम करने वाली कंपनियां हर समय अपने ग्राहकों के साथ स्पष्ट, सटीक और ईमानदारी से संवाद करती हैं। क्वांटास समूह की मुख्य कार्यकारी अधिकारी वेनेसा हडसन ने कहा कि यह समझौता अदालत की मंजूरी के अधीन है और यह एक महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि हम राष्ट्रीय विमानन कंपनी के प्रति विश्वास बहाल करने की दिशा में काम कर रहे हैं। हडसन ने कहा, जब छ्वङ्कढ्ढष्ठ शटडाउन के बाद उड़ान फिर से शुरू हुई, तो हम मानते हैं कि कंटास ने ग्राहकों को निराश किया। हम जानते हैं कि हमारे कई ग्राहक समय पर विमान रद्द होने की सूचनाएं प्रदान करने में हुई हमारी विफलता से प्रभावित हुए थे और हमें ईमानदारी से इसके लिए खेद है।क्वांटास, जिसने पिछले साल .1.1 बिलियन का वार्षिक लाभ दर्ज किया था। हाल के वर्षों में क्वांटास एयरलाइन टिकटों की बढ़ती कीमतों, खराब सेवा मानकों के दावों और छ्वङ्कढ्ढष्ठ-19 महामारी के दौरान 1,700 ग्राउंड स्टाफ की बर्खास्तगी जैसी चीजों के लिए चर्चा में रहा है।

सेंसेक्स 200 अंक चढ़ा, निफ्टी 22500 के पार

नई दिल्ली(एजेंसी)। हफ्ते के पहले कारोबारी दिन शेयर बाजार में मिले-जुले रुख के साथ कारोबार होता दिखा। सेंसेक्स और निफ्टी दिन के ऊपरी स्तरों से फिसलते दिखे। सुबह 10 बजकर 26 मिनट पर सेंसेक्स 235.82 (0.31त्न) अंकों की बढ़त के साथ 74,106.15 पर कारोबार करता दिखा। दूसरी ओर, निफ्टी 7.36 (0.03त्न) अंक ऊपर 22,483.20 पर कारोबार करता दिखा।

राजस्थान में जियो का दबदबा बरकरार, मार्च माह में 1.46 लाख ग्राहक जोड़े, ट्राई रिपोर्ट

जयपुर(एजेंसी)। रिलायंस जियो ने राजस्थान में एक बार फिर अच्छा प्रदर्शन किया है। जियो ने राजस्थान में 31 मार्च, 2024 तक 2.67 करोड़ ग्राहकों का आधार हासिल किया है। इस बड़े ग्राहक आधार के साथ जियो राजस्थान में नंबर एक टेलीकॉम ऑपरेटर के स्थान पर बरकरार है। ट्राई की रिपोर्ट अनुसार, मार्च महीने में जियो ने राजस्थान में कुल 1.46 लाख नए उपभोक्ताओं को जोड़ा और अन्य दूरसंचार ऑपरेटरों से बेहतर प्रदर्शन किया। मार्च 2024 में भारती एयरटेल ने 80,152 ग्राहक जोड़े। वहीं, वोडाफोन आइडिया और बीएसएनएल ने राजस्थान में क्रमशः 83,800 लाख और 1.14 लाख मौजूदा ग्राहक खो दिए। राजस्थान का कुल वायरलेस सेवा का ग्राहक आधार 31 मार्च, 2024 तक बढ़कर 6.63 करोड़ पहुंच गया है और इस महीने में कुल ग्राहक आधार 28,014 तक बढ़ा है। ट्राई की रिपोर्ट अनुसार, जियो राजस्थान में 2.67 करोड़ ग्राहकों के साथ शीर्ष पर है, जिसके बाद भारती एयरटेल, वोडाफोन आइडिया और बीएसएनएल की ग्राहक संख्या क्रमशः 2.33 करोड़, 1.06 करोड़ और 55.62 लाख रही। जियो ने राजस्थान के 350 से अधिक शहरों और कस्बों में 5जी सेवाएं शुरू कर दी है और राज्य में इसकी 5जी कवरेज सबसे व्यापक और बड़ी है।

एफआईआई की बिकवाली का असर लार्ज कैप शेयरों पर

नई दिल्ली(एजेंसी)। शेयर बाजार में लार्ज कैप शेयरों का परफॉर्मेंस एफआईआई की बिकवाली से प्रभावित हो रहे है। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि अभी चौथी तिमाही के नतीजे का मौसम चल रहा है, इसमें निवेशकों को अपना पोर्टफोलियो इसी आधार पर बनाना चाहिए। बाजार बैंक ऑफ़ इंग्लैंड की नीति और यूरोजोन के जीडीपी आंकड़ों को लेकर भी सतर्क रहेगा। उन्होंने कहा, हमें उम्मीद है कि हाई वैल्यूएशन और चुनाव संबंधी किसी झटके के कारण बाजार में कुछ हद तक करेक्शन हो सकता है। उन्होंने कहा कि एफआईआई बाजार में बिकवाली करते रहे, जिससे लार्ज कैप शेयरों के प्रदर्शन पर असर पड़ा। उम्मीद से थोड़ी बेहतर चौथी तिमाही की आय और तेल की कीमतों में सुधार के कारण सप्ताह के दौरान घरेलू बाजार की सकारात्मक शुरुआत हुई। उन्होंने कहा, हालांकि हाई इन्फ्लेशन की स्थिति जारी रहने की फेड की चेतावनी के चलते घरेलू बाजार में करेक्शन होने लगा। ऑटो कंपनियों की अच्छी कमाई के कारण सेक्टर का प्रदर्शन थोड़ा बेहतर रहा। उन्होंने कहा, इसके अलावा, चौथी तिमाही के सकारात्मक नतीजों और बिजली की मांग में बढ़ोतरी के कारण बैंकों और पावर सेक्टर में हलचल दिखाई दे रही है। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के खुदरा अनुसंधान प्रमुख सिद्धार्थ खेमका ने कहा- हमें उम्मीद है कि बाजार व्यापक दायरे में मजबूत होगा।

टी20 विश्व कप पर आतंकी हमले का खतरा आईसीसी और मेजबान देश अलर्ट

नई दिल्ली(एजेंसी)। आईपीएल 2024 के तुरंत बाद यूएसए और वेस्टइंडीज में 1 जून से टी20 विश्व कप का आयोजन होना है। हालांकि, इस बीच टूर्नामेंट पर आतंकी हमले का साया आ गया है। वर्ल्ड कप के लिए तैयारियां अंतिम चरण में हैं, लेकिन इस बीच आतंकी साजिश की खबर जो सामने निकल कर आई है उसने सबकी टेंशन बढ़ा दी है। हालांकि, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने कहा है कि वह टी20 विश्व कप के मेजबान देश- वेस्टइंडीज और यूएसए के साथ मिलकर काम कर रही है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस मेगा-इवेंट पर आतंकी खतरे से निपटने के लिए पुख्ता तैयारी हो। पुरुषों का टी20 विश्व कप 1-29 जून तक वेस्टइंडीज और यूएसए में होने वाला है। कैरेबियाई मीडिया रिपोर्ट के अनुसार वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड को उत्तरी पाकिस्तान से वर्ल्ड कप मैचों के दौरान आतंकी हमले का अलर्ट प्राप्त हुआ है। पुरुष टी20 विश्व कप पर आतंकी खतरे के बारे में पूछे जाने पर आईसीसी के एक अधिकारी ने बताया, आईसीसी उचित योजनाएं सुनिश्चित करने के लिए मेजबान देशों के साथ मिलकर काम कर रही है। रिपोर्ट सामने आते ही हमने तुरंत अधिकारियों से बात की और क्रिकेट वेस्टइंडीज ने सभी को आश्वासन दिया है कि किसी भी जोखिम से निपटने के लिए एक मजबूत सुरक्षा योजना बनाई गई है। त्रिनिदाद ने पीएम प्रधानमंत्री डॉ. कीथ रोवले के हवाले से लिखा, सुरक्षा एजेंसियां विश्व कप पर खतरे से निपटने के लिए काम कर रही हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि 21वीं सदी में भी दुनिया में आतंकवाद का खतरा अलग-अलग रूपों में बना हुआ है। हालांकि, इन खतरों को कम करने के लिए, हम स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर हर खतरों के प्रति सतर्क रहे हैं और हमारी खुफिया और अन्य सुरक्षा एजेंसियां पूरे टूर्नामेंट के दौरान देशों और स्थानों पर सबकी सुरक्षा के लिए काम कर रही हैं। वेस्टइंडीज में टी20 विश्व कप के मैच एंटीगा एंड बारबुडा, बारबाडोस, गुयाना, सेंट लूसिया, सेंट विंसेंट एंड ग्रेनेडाइंस के अलावा त्रिनिदाद एंड टोबैगो में होंगे।

चीन ने इंडोनेशिया को 3-0 से हराकर 16वीं बार जीता उबेर कप

बीजिंग(एजेंसी)। उबेर कप बैडमिंटन-2024 के फाइनल में, चीनी टीम ने इंडोनेशिया को 3-0 से हराकर चैंपियनशिप अपने नाम की। इस फाइनल के पहले महिला एकल मैच में चीनी महिला खिलाड़ी छन युफ़ेई ने इंडोनेशियाई महिला खिलाड़ी ग्रेगोरिया मारिस्का टुनजुंग को सिर्फ 38 मिनट में सीधे सेटों में हराया। दूसरे महिला युगल मैच में छन छिंगछेन और च्या यिफ़ान ने भी इंडोनेशियाई महिला युगल सीति फादिया सिल्वा रामधन्ति और रिबका सुगियार्तो को 2-0 से हराया। तीसरे महिला एकल मैच में, चीनी महिला खिलाडी ह बिंगच्याओ ने पहला गेम हारने के बाद एस्टर नुरुमी ट्राई वार्डोयो को 2-1 से हराया। अंत में, चीनी टीम ने इंडोनेशियाई टीम को 3-0 के स्कोर से हराया और चैंपियनशिप जीती। उबेर कप, जिसे विश्व महिला बैडमिंटन टीम चैम्पियनशिप के रूप में भी जाना जाता है। इस आयोजन के इतिहास में, चीनी टीम सबसे सफल टीम रही है।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने नए मानक ग्रेड के रूप में इनोवा क्रिस्टा जीएक्स+ पेश किया

बैंगलोर। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) ने इनोवा क्रिस्टा लाइनअप में नए ग्रेड, जीएक्स+ की शुरुआत की घोषणा की। ग्राहक केंद्रितता पर कंपनी के फोकस से प्रेरित होकर, नया ग्रेड उन्नत सुविधाओं का दावा करता है और इस प्रकार ग्राहक की प्राथमिकताओं के अनुरूप उत्कृष्टता प्रदान करने के लिए टीकेएम की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इनोवा क्रिस्टा लाइन-अप को पुनर्जीवित करते हुए, नई पेश की गई इनोवा क्रिस्टा जीएक्स + ग्रेड 14 अतिरिक्त सुविधाओं से भरी हुई है, जो सामंजस्यपूर्ण रूप से कार्यात्मक और सौंदर्य संवर्द्धन का मिश्रण है और ड्राइविंग के समग्र अनुभव को बढ़ाती है। इनोवा क्रिस्टा जीएक्स+ की मुख्य विशेषताओं में रियर कैमरा, ऑटो-फोल्ड मिरर, डीवीआर जैसी कार्यात्मक विशेषताएं शामिल हैं, साथ ही डायमंड-कट अलॉय, वुडन पैनल और प्रीमियम फैब्रिक सीट जैसी सौंदर्य वृद्धि भी शामिल है। 7 और 8-सीटर विकल्पों में पेश किया गया, जीएक्स+ ग्रेड पांच रोमांचक रंगों में उपलब्ध है, जैसे सुपर व्हाइट, एटीट्यूड ब्लैक मीका, अवंत-गार्डे ब्रॉन्ज़ मेटैलिक, प्लैटिनम व्हाइट पर्ल और सिल्वर मेटैलिक, जिनमें से प्रत्येक वाहन के बहुमुखी पैलेट में एक अनूठा स्वभाव जोड़ता है। नई पेशकश पर टिप्पणी करते हुए टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के बिक्री-सेवा-उपयोगी कार व्यवसाय के वाइस प्रेसिडेंट श्री सबरी मनोहर ने कहा , 2005 में अपने लॉन्च के बाद से ही इनोवा ब्रांड ने उद्योग के मानक स्थापित करके इस क्षेत्र में अग्रणी होने की अडिग प्रतिष्ठा अर्जित की है। गुणवत्ता और भरोसे का पर्याय, इनोवा ने भारतीयों की कई पीढ़ियों की विविध गतिशीलता आवश्यकताओं को पूरा किया है और उसी आकांक्षात्मक मूल्य को बनाए रखना जारी रखा है। टीकेएम में हमारा प्रयास हमेशा से ही हमारे ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण के अनुरूप, ग्राहकों के बदलते रुझानों के आधार पर ब्रांड को प्रासंगिक और बहु-कार्यात्मक बनाए रखना रहा है। नई पेश की गई इनोवा क्रिस्टा जीएक्स+ ग्रेड हमारी मौजूदा इनोवा क्रिस्टा लाइन-अप का पूरक है । नई पेश की गई सुविधाएँ उन्नत सुविधाओं और बहु-कार्यक्षमता के माध्यम से अधिक मूल्य प्रदान करने के मामले में एक छलांग हैं।

आशापुरी गोल्ड ऑर्नामेंट लिमिटेड का रु. 48.75 करोड़ का राइट्स इश्यू 8 मई, 2024 को खुलेंगा

अहमदाबाद - सोने के आभूषणों के प्रमुख निर्माताओं और हॉलसेलर्स में से एक आशापुरी गोल्ड ऑर्नामेंट लिमिटेड का (बीएसई - AGOL - 542579) रु. 48.75 करोड़ का राइट्स इश्यू 8 मई, 2024 को खुलेंगा। इश्यू के माध्यम से जुटाई गई धनराशि का उपयोग कंपनी की विस्तार योजनाओं, नए क्षेत्रों में प्रवेश और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए कार्यशील पूंजी की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए किया जाएगा। कंपनी का राइट इश्यू रु. 5.85 प्रति शेयर की कीमत पर पेश किया जाता है जो 3 मई, 2024 को बंद शेयर मूल्य पर 57.45 प्रतिशत की छूट दिखाता है। राइट्स इश्यू 27 मई, 2024 को बंद होगा। कंपनी रु. 1 के अंकित मूल्य के 8,33,28,666 फुल्ली पेइड इक्विटी शेयर रु. 5.85 प्रति इक्विटी शेयर (रु. 4.85 प्रति इक्विटी शेयर के प्रीमियम सहित) की कीमत पर जारी करेगी, जिसका कुल मूल्य रु. 48.75 करोड़ होगा। प्रस्तावित इश्यू के लिए राइट्स एंटाइटेलमेंट अनुपात 1:3 पर तय किया गया है (रिकॉर्ड तिथि 18 अप्रैल, 2024 को इक्विटी शेयरधारकों द्वारा रखे गए प्रत्येक रु. 1 के 3 इक्विटी शेयरों के लिए रु. 1 के अंकित मूल्य का 1 इक्विटी शेयर)। ऑन-मार्केट अधिकार अधिकारों के त्याग की अंतिम तिथि 21 मई, 2024 है। आशापुरी गोल्ड ऑर्नामेंट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक दिनेश कुमार सोनी ने बताया कि, कंपनी ने हाल के दिनों में उत्पादन क्षमताओं का विस्तार करने, विभिन्न बाजारों के लिए नई प्रोडक्ट लाइनें और कलेक्शन लॉन्च करने पर ध्यान देने के साथ महत्वपूर्ण रणनीतिक पहल की है। हमारा लंबे समय के लिए फोकस टीम डेवलपमेंट में निवेश करना और भारत की सबसे बड़ी बीटुबी प्रदर्शनियों में भाग लेना जारी रहेगा। इश्यू से होने वाली आय कंपनी की बैलेंस शीट को और मजबूत करेगी और इसकी विस्तार योजनाओं और रणनीतिक विकास पहलों को वित्त पोषित करने में मदद करेगी। कंपनी के बोर्ड ऑफ डिरेक्टर्स ने 10 अप्रैल, 2024 को पात्र इक्विटी शेयरधारकों को रु. 48.75 करोड़ से अधिक की राशि के लिए राइट्स इश्यू के माध्यम से इक्विटी शेयर जारी करने की मंजूरी दे दी। राइट्स इश्यू के बाद, कंपनी के कुल बकाया शेयर बढ़कर 33,33,14,666 इक्विटी शेयर हो जाने चाहिए, जो राइट्स इश्यू से पहले 24,99,86,000 इक्विटी शेयर थे।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 09 मई 2024

हाईस्कूल एवं हायर सेकण्डरी मुख्य परीक्षा परिणाम आज

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल की हाईस्कूल एवं हायर सेकण्डरी मुख्य परीक्षा 2024 का परीक्षा परिणाम 9 मई को दोपहर 12.30 बजे मण्डल के सभागृह में घोषित किया जाएगा। परीक्षा परिणाम मण्डल की वेबसाईट https://cgbse.nic.in, https://cg.results.nic.in एवं https:// results.cg.nic.in पर जारी किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

प्रदेश की सात लोकसभा सीटों पर हुआ 66.94 प्रतिशत मतदान

रायपुर (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में छत्तीसगढ़ की 7 सीटों पर मंगलवार को चुनाव संपन्न हुए। निर्धारित समय शाम 6 बजे तक 66.94 प्रतिशत वोटिंग दर्ज की गई। इन सात सीटों में रायपुर, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, दुर्ग, जांजगीर चांपा और सरगुजा में चुनाव संपन्न हुए। मंगलवार को हुए चुनाव में सर्वाधिक मतदान प्रदेश के रायगढ़ लोकसभा सीट में दर्ज किया गया है जहां 76.38 प्रतिशत मतदान हुआ है। वहीं सबसे कम बिलासपुर में मतदान हुआ है जहां 60.05 प्रतिशत वोटिंग दर्ज की गई है। इसके अलावा रायपुर में 61.25, दुर्ग में 67.33, कोरबा में 70.60, सरगुजा में 74.17,जांजगीर-चांपा में 62.44 प्रतिशत मतदान हुआ है। बता दें कि प्रदेश के अंतिम चरण के चुनाव में कांग्रेस भाजपा सहित 168 प्रत्याशी मैदान में थे जिनमें 26 महिला उम्मीदवार है। इनमें सबसे ज्यादा 38 प्रतिशत रायपुर से तो 37 प्रत्याशी बिलासपुर से चुनाव लड़ रहे हैं।

104 वर्षीय बुजुर्ग महिला ने किया मतदान

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। मतदान के प्रति उत्साह लोगों में देखते ही बन रहा था। वहीं उम्र दराज व्यक्ति भी मतदान के प्रति काफी उत्साहित नजर आ रहे थे। लोकतंत्र के इस महापर्व में बुजुर्गों का भी उत्साह देखा गया। नगर पालिका क्षेत्र अंतर्गत वार्ड क्रमांक 10 ,काली मंदिर के पीछे रहने वाली 104 वर्षीय श्रीमती सुबौती बाई साहू ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। उनके पुत्र भाजपा नेता फेकनू साहू अपनी मां को मतदान केंद्र तक लेकर आए।

लोकतंत्र के पर्व में ट्रांसजेंडर समुदाय ने लिया बढ़-चढ़कर हिस्सा

रायपुर (आरएनएस)। राष्ट्र निर्माण में अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए उभयलिंगी समुदाय ने आज रायपुर लोकसभा के चुनाव में बढ़ चढकर हिस्सा लिया। मतदाताओं ने सुबह से ही बूथ पर पहुंच कर अपने मताधिकार का प्रयोग किया और सभी से मतदान करने की अपील की। उल्लेखनीय है कि लोकतंत्र में समाज के सभी समुदाय की भागीदारी महत्वपूर्ण होती है। इससे समानता और सामाजिकता का भाव मजबूत होता है।

एनटीपीसी लारा को पर्यावरण संरक्षण के लिए आपेक्ष इंडिया अवार्ड से पुरस्कृत किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। एनटीपीसी लारा स्टेशन को एपेक्स इंडिया फाउंडेशन द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए किए गए प्रयासों के लिए डायमंड अवार्ड से सम्मानित किया गया है। थर्मल पावर स्टेशनों द्वारा पर्यावरण संरक्षण श्रेणी में, एनटीपीसी लारा पिछले तीन वर्षों से लगातार यह पुरस्कार प्राप्त करने वाला एकमात्र स्टेशन है। उल्लेखनीय है कि एनटीपीसी लारा स्टेशन पर्यावरण अनुकूल सुपर क्रिटिकल तकनीक से सुसज्जित है। इसकी दक्षता अन्य सबक्रिटिकल प्लांट से 40.5 प्रतिशत ज्यादा दक्षता सम्पन्न है। उच्च दक्षता सम्पन्न होने के कारण इस संयंत्र को बिजली उत्पादन के लिए कम कोयले की आवश्यकता होती है। कोयले की कम खपत के साथ यह संयंत्र पारंपरिक संयंत्रों की तुलना में कम ग्रीनहाउस गैसें उत्पन्न करता है और राख़ उत्सर्जन भी कम होता है। नई तकनीक के अलावा, एनटीपीसी लारा पर्यावरण संरक्षण के लिए विभिन्न उपाय करता है। मियावाकी तकनीक के साथ वनीकरण, मैत्री नगर टाउनशिप और आसपास के गांवों के खुले क्षेत्रों में लागू किया गया है। विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों द्वारा जल संरक्षण और जल निकायों के विकास का ध्यान रखा जाता है।

ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र श्री अखिलेश सिंह, एचओपी (लारा) को सौंपा गया, इस मौके पर श्री राजीव रंजन, महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण), श्री एसके सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (प्रचालन), श्री सुधीर दहिया, अपर महाप्रबंधक (पर्यावरण प्रबंधन) और श्री जाकिर खान, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) की उपस्थिति रही।

मंत्रालय में नव नियुक्त कर्मचारियों के लिए ओरियेंटेशन कार्यक्रम सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। मंत्रालय महानदी भवन में छत्तीसगढ़ मंत्रालयीन सेवा में नवनियुक्त कर्मचारियों के लिए ओरियेंटेशन (प्रशिक्षण) कार्यक्रम का आयोजन सामान्य प्रशासन विभाग के तत्वावधान में किया गया।

सामान्य प्रशासन विभाग के सचिव श्री अन्बलगन पी ने नवनियुक्त कर्मचारियों को मंत्रालयीन कार्य के संबंध महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये कहा कि अधिकारी कर्मचारी अपने अच्छे कार्य से प्रगति कर सकते है। उन्होंने कार्य पूरी मेहनत, लगन एवं समपर्ण की भावना से करने के लिए कर्मचारियों को प्रेरित किया। सामान्य प्रशासन विभाग के सचिव ने कर्मचारियों को प्रशिक्षण के महत्व के संबंध में भी बताया। कार्यक्रम के दौरान मंत्रालयीन अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भी अपने अनुभव के बारे में बताया। कार्यक्रम में मंत्रालयीन कर्मचारी संघ का सहयोग सहरानीय रहा।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर मंडल द्वारा ऑपरेशन यात्री सुरक्षा

रायपुर (विश्व परिवार)। दिनांक 06 मई 2024 को रेलवे सुरक्षा बल रायपुर मंडल द्वारा मंडल सुरक्षा आयुक्त/रेसुब/रायपुर श्री एस.के.गुप्ता के दिशा निर्देशन में रेसुब पोस्ट रायपुर प्रभारी निरीक्षक एस.दत्ता के नेतृत्व उ.नि. ए.जेड.चौधरी, मंडल टास्क टीम उ.नि. के.बी.गुप्ता एवं स्टाफ एवं जी.आर.पी. रायपुर के साथ यात्री सामान की चोरी में संलिप्त आरोपियों की धरपकड़ के दौरान मुखबीर की सूचना पर एक व्यक्ति को एक नग एच.पी लैपटॉप के साथ संयुक्त रूप से घेराबंदी कर पकड़ा गया उक्त लैपटॉप को एक माह पहले रायपुर रेलवे स्टेशन मे बैठे किसी यात्री का बैग सहित चोरी करना स्वीकार किया। जीआरपी थाना रायपुर द्वारा अपराध क्रमांक 51/2024 धारा 379 आईपीसी के प्रकरण में उक्त आरोपी को संलग्न कर माननीय न्यायालय रायपुर के समक्ष पेश किया गया।

ऑपरेशन उपलब्ध- दिनांक 06.05.24 को रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट रायपुर द्वारा मुखबीर की सूचना पर गायत्रीनगर शंकरनगर जगन्नाथ मंदीर रोड रायपुर स्थित रनवीर फोटोकॉपी एवं स्टेशनरी नाम के दुकान संचालक को रेलवे के आरक्षित टिकटो का अवैध कारोबार करते पाये जाने पर एक पर्सनल आई.डी से कुल 21 नग टिकट कुल अनुमानित कीमत 40, 808 रूपये के अनाधिकृत टिकटो को जप्त कर रेलवे अधिनियम की धारा 143 के तहत कार्यवाही कर विधिवत् कार्यवाही किया गया।

पेयरिंग रैक के (18238 अमृतसर-बिलासपुर छ.ग. एक्सप्रेस) अत्यधिक विलंब से चलने के कारण कल दिनांक 08 मई 2024 को बिलासपुर से चलने वाली गाड़ी संख्या 08210 बिलासपुर-कोरबा पैसेंजर, बिलासपुर से 05 घंटे देरी से अर्थात 12.30 बजे रवाना होगी। इसीप्रकार दिनांक 08 मई 2024 को कोरबा से चलने वाली गाड़ी संख्या 18237 कोरबा-अमृतसर छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस भी, कोरबा से 04 घंटे देरी से अर्थात दोपहर 15.33 बजे रवाना होगी।

चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर शंकर नगर रायपुर में प्रतिदिन चल रही धार्मिक कक्षाओ में बच्चे बड़े सिख रहे है धार्मिक क्रियाएं

रायपुर (विश्व परिवार)। 1008 श्री चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन समाज मंदिर शंकर नगर, रायपुर में दिगंबर जैन धर्म जिनागम ज्ञान की धारा अविरल बहती रहे। इस निमित्त से मंदिर विगत 1 वर्ष से धार्मिक कक्षाएं चल रही है। चंद्र प्रभु जैन मंदिर के सदस्य आर्किटेक्ट इंजि. मनीष जैन ने बताया की धार्मिक कक्षाओं का उद्देश्य दिगंबर जैन धर्म की धार्मिक क्रियाएं जैसे अभिषेक, शांति धारा, अष्ट द्रव्य पूजन, के साथ धर्म ग्रंथ की शिक्षा सभी समाज जन तक पहुंचना है। इन कक्षाओं में प्रथमानुयोग, करुणानुयोग, द्रव्यानुयोग आदि ग्रंथों का वाचन होता है। साथ ही स्वाध्याय, शंका समाधान, जिनदेव पूजन विधि आदि की भी शिक्षा परम पूज्य संत शिरोमणि समाधिस्थ 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य आदरणीय ब्रह्मचारी सुनील भैया जी द्वारा दी जा रही है। उनके द्वारा प्रतिदिन नित्य नियम से प्रात: सुबह 7 बजे से जिन भगवान का प्रसूक जल से अभिषेक, शांति धारा पश्चात जैन ग्रंथो का अध्यन स्वाध्याय, ज्ञान अर्जन करवाया जा रहा है। जिसमे समाज के धर्म प्रेमी बंधुओ के अलावा बच्चे भी बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे है। इन धार्मिक कक्षाओं में लगभग प्रतिदिन लगभग 100 लोग भाग ले रहे है जिसमे बड़े बच्चे सभी शामिल है। प्रतिदिन रात्रि में भी 08:30 बजे भी स्वाध्याय कक्षा आदरणीय ब्रह्मचारी सुनील भैयाजी (डीजीएम/बीएसएनल) द्वारा संचालित की जाती है।आज की कक्षाओं में दिगंबर जैन बड़ा मंदिर से अध्यक्ष संजय नायक जैन सचिव राजेश रज्जन जैन, उपाध्यक्ष श्रेयश जैन बालू के साथ प्रवीण जैन मामा जी, सनत जैन, प्रणीत जैन, अमित गोइल, मनीष जैन, अजय जैन विपुल जैन विजय कस्तूरे एम एल जैन, सोनल जैन शैली जैन, विनिता जैन, स्मृति गोयल, माया जैन, के साथ बड़ी संख्या में महिलाए उपस्थित थी।

-प्रणीत जैन

थालेसीमिया के खिलाफ जागरूकता : एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल का प्रयास

रायपुर (विश्व परिवार)। विश्व थैलेसीमिया दिवस के अवसर पर, एम एम आई नारायणा हॉस्पिटल लोगों को थैलेसीमिया के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण संदेश देने के लिए समर्थ है। थैलेसीमिया एक ऐसा गंभीर रोग है जिसमें लाल रक्तकोशिकाओं के उत्पादन में असमर्थता होती है, जिससे शारीरिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है। थकान, सांस लेने में कठिनाई, ठंड, चक्कर आना, और पीली त्वचा थैलेसीमिया के लक्षणों हैं। इस रोग के संघर्ष के समय, नियमित चिकित्सा जांच और उपचार का पालन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

एम एम आई नारायणा हॉस्पिटल के वरिष्ठ सलाहकार इंटरनल मेडिसिन डॉ. मुकेश कुमार शर्मा का मानना है की आधुनिक उपचार सुविधाओं के साथ थैलेसीमिया के प्रबंधन में नेतृत्व कर रहा है। हमारे ब्लड बैंक केंद्र में प्रभावी रक्ताधान की सुविधा उपलब्ध है, साथ ही हाल ही में हमने 2 बोन मेरो ट्रांसप्लांट भी किया हैं। इलाज अलग-अलग लोगों के लिए अलग हो सकता है, लेकिन रक्त स्त्राव को सामान्य करने के लिए रक्त प्रवाह को बढ़ावा देने और रक्त उत्पादन को सुधारने के लिए उपाय किए जा सकते हैं।

थैलेसीमिया को नियंत्रित करने के लिए समयगत चिकित्सा जांच, उपचार, और सहायता का हमेशा समर्थन करते हैं। हम लोगों को थैलेसीमिया के बारे में जागरूक करने के लिए संघर्ष करते हैं ताकि जागरूकता बढ़ाई जा सके और लोग इस रोग के खिलाफ उचित सुरक्षा के साथ सजग रह सकें और एम.एम.आई. नारायणा हॉस्पिटल इसमें आपके साथ है।

डॉ. मुकेश कुमार शर्मा ने यह भी कहा की संघर्ष के खिलाफ मिलकर, हम थैलेसीमिया के बचाव और इलाज की दिशा में नए उत्थानों को अपनाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। लुस्पेटरसेप्ट जैसे उपचारों का प्रयोग थैलेसीमिया के रोगियों को राहत प्रदान करने में मदद करता है। हमारे विशेषज्ञ चिकित्सा टीम के द्वारा प्रदान की जाने वाली उचित देखभाल से, थैलेसीमिया के रोगियों को समर्थन और देखभाल की जरूरत प्राप्त होती है।

इस विशेष दिन पर, हमारी कोशिश को सफल बनाने के लिए हम सभी को साझा जिम्मेदारी महसूस करते हैं। हम थैलेसीमिया के खिलाफ जागरूकता बढ़ाने के लिए अपील करते हैं ताकि हम सभी एक स्वस्थ और खुशहाल भविष्य की ओर अग्रसर हो सकें।

संघर्ष के इस महत्वपूर्ण दौरान, हमारे संगठन, एम एम आई नारायणा हॉस्पिटल, ने अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखने के लिए पूरी तरह से समर्पित है। हम आपके सहयोग और साझेदारी की अपेक्षा करते हैं, जिससे हम सभी मिलकर थैलेसीमिया के खिलाफ लड़ाई में सफल हो सकें। थैलेसीमिया एक गंभीर रक्त विकार है जिसका सही उपचार मिलना जरूरी है। इसलिए, अगर आपको थैलेसीमिया के लक्षण महसूस होते हैं, तो तुरंत चिकित्सक से संपर्क करें और सही उपचार प्राप्त करें।

प्रदेश के कई हिस्सों में हल्की बारिश के आसार, 18 जिलों के लिए येलो अलर्ट जारी

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ में एक बार फिर मौसम ने करवट ली है. मंगलवार सुबह से प्रदेश के कई जिलों में घने बादल छाए रहे, वहीं कई इलाकों में आंधी तूफ़ान के साथ झमाझम बारिश हो रही है. इस बीच मौसम विभाग ने राज्य के 18 जिलों के लिए येलो अलर्ट जारी किया है. मौसम विभाग के मुताबिक, बालोद, बलौदाबाजार, बेमेतरा, बिलासपुर, धमतरी, दुर्ग, गरियाबंद, गौरेला पेंड्रा मरवाही, जांजगीर-चांपा, जशपुर, कोरबा, मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी, रायगढ़, रायपुर, राजनांदगांव, सक्ती, सारंगढ़ बिलाईगढ़, सरगुजा में कुछ स्थानों पर तेज हवा के साथ आंधी और बारिश होने की संभावना है. मौसम विभाग का कहना है कि अगले 24 घंटे तक मौसम ऐसे ही रहेगा. मौसम विज्ञानी एचपी चंद्रा ने बताया कि सिनोप्टिक सिस्टम एक चक्रवर्ती परिसंचरण दक्षिणी झारखंड और आसपास के क्षेत्र में समुद्र तल से 0.9 किलोमीटर ऊपर स्थित है. जबकि एक ट्रफरेखा दक्षिण झारखंड से पश्चिम मध्य प्रदेश तक चक्रवर्ती परिसंचरण के ऊपर से समुद्र तल से 0.9 किलोमीटर बनी हुई है. समुद्र तल से 0.9 किलोमीटर ऊपर पूर्वी विदर्भ से लेकर तेलंगाना-रायलसीमा-दक्षिण आंतरिक कर्नाटक से दक्षिण तमिलनाडु तक एक ट्रफ का विच्छेदन बना हुआ है. इसकी वजह से छत्तीसगढ़ के मौसम में बदलाव देखने को मिल रहा है।

कांग्रेस मुद्दाविहीन, चुनाव में दुर्गति हो रही : मुख्यमंत्री

रायपुर (आरएनएस)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ओडिशा दौरे के लिए रवाना हो गए हैं। रवानगी से पहले सीएम साय ने पुलिस ग्राउंड में पत्रकारों से चर्चा की। उन्होंने कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी के बयान पर पलटवार किया। उन्होंने कहा कि इनके पास कोई मुद्दा नहीं है। इस बार के चुनाव में कांग्रेस की और दुर्गति होने वाली है. इसके साथ ही दिग्विजय सिंह के ईवीएम पर उठाए गए सवाल पर भी जवाब दिया है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने तीसरे चरण के हुए चुनाव पर कहा कि लोकतंत्र के महापर्व का छत्तीसगढ़ में समापन हो गया है. अच्छा मतदान हुआ है. जिस तरह से हमने पूरे प्रदेश का दौरा किया है. विश्वास के साथ कह सकते हैं कि पूरी सीट हमारी पार्टी जीत रही है. सब तरफ से हमने फीडबैक लिया है. सोनिया गांधी के बेरोजगारी समेत अन्य मुद्दे उठाए जाने पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि इनके पास कोई मुद्दा नहीं है. घूम फिर कर उसी में आ जा जाते हैं. इस बार के चुनाव में कांग्रेस की और दुर्गति होने वाली है। कांग्रेस वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने ईवीएम पर जताई गई आपत्ति पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि जब जब हारते है। ईवीएम पर ठीकरा फोड़ते हैं और जब जीतते हैं तो सवाल नहीं करते हैं।

एनटीपीसी कोरबा ने सफलतापूर्वक दो आदर्श मतदान केंद्रों को तैयार करते हुए निगम के मार्गदर्शन सहित मतदान करवाया

कोरबा (विश्व परिवार)। लोकसभा आम निर्वाचन के तीसरे चरण अंतर्गत एनटीपीसी कोरबा में दो आदर्श मतदान केंद्र (मॉडल मतदान केंद्र) बनाए गए। सरस्वती शिशु मंदिर कृष्णा विहार आदर्श मतदान केंद्र में पिंक पोलिंग बूथ क्रमांक 27, 28 और 30 बनाए गए तथा स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी/हिंदी विद्यालय यमुना विहार आदर्श मतदान केंद्र में महिला सशक्तिकरण बूथ क्रमांक 29 और 31 बनाए गए।

एनटीपीसी कोरबा ने इन दोनों पोलोंग बूथों पर सभी नासिक सुविधाएं प्रदान की थीं और अपने कर्मचारियों को मतदान करने के लिए प्रोत्साहित भी किया था। ये दोनों मतदान केंद्र एनटीपीसी कोरबा द्वारा बनाए गए मॉडल मतदान केंद्र थे।

कोरबा विधानसभा अंतर्गत एनटीपीसी कोरबा के सरस्वती शिशु मंदिर तथा स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी/हिंदी विद्यालय मतदान केन्द्रों में महिला मतदान दल द्वारा अपनी कार्य कुशलता का परिचय देते हुए सुगमतापूर्वक मतदान कराया जा रहा है। एनटीपीसी कोरबा द्वारा प्रदान की गई व्यवस्था सफल एवं सराहनीय रही।

पीएम सूर्यघर योजना में छत्तीसगढ़ को देश का अग्रणी राज्य बनाएं : विवेक देवांगन

आरईसी के सीएमडी श्री विवेक देवांगन ने ली समीक्षा बैठक

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज मुख्यालय में आरईसी (ग्रामीण विद्युतीकरण निगम) के चेयरमेन-एमडी श्री विवेक कुमार देवांगन ने विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने पीएम-सूर्यघर योजना एवं आरडीएसएस योजना के विभिन्न घटकों के कार्य तेजी से पूरा करने के निर्देश दिए और कहा कि इस योजना को प्रदेश के घरेलू उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए विशेष अभियान चलाया जाए। शहरी क्षेत्रों में बने पक्के मकानों की छतों में सोलर पैनल लगाकर लोगों को बिजली उत्पादन के लिए प्रेरित करें, इससे उनके घर का बिजली बिल बहुत कम हो जाएगा।

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के डंगनिया स्थित मुख्यालय विद्युत सेवा भवन में 6 मई को आयोजित बैठक की अध्यक्षता छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के चेयरमेन श्री पी दयानंद ने की। इस अवसर पर प्रबंध निदेशक द्वय श्री राजेश कुमार शुक्ला एवं श्री एसके कटियार विशेष रूप से उपस्थित थे।

श्री देवांगन ने कहा कि पीएम सूर्यघर योजना, आर.डी.एस.एस का प्रस्तुतिकरण देखा तथा बिंदुवार विषयों की समीक्षा की। उन्होंने उम्मीद जताई है कि इन दोनो योजनाओं के क्रियान्वयन में छत्तीसगढ़ को देश के पाँच अग्रणी राज्यों में शामिल कराने के लिए गंभीरता से प्रयास करेंगे।

पॉवर कंपनी के अधिकारियों ने बैठक में बताया कि प्रदेश में 60 लाख से अधिक उपभोक्ताओं को निर्बाध विद्युत आपूर्ति की जा रही है। इनमें से 42 लाख घरेलू उपभोक्ताओं को 400 यूनिट तक की खपत पर हाफ बिजली योजना का लाभ दिया जाता है, उन्हें आधा बिल देना होता है। पीएम सूर्यघर योजना के तहत यदि वे अपने घर की छत पर सोलर प्लांट लगवाते हैं तो उनका बिजली बिल और भी कम हो जाएगा, जिससे उन्हें प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ होगा।

आरईसी के सीएमडी श्री देवांगन ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचे और हर आवेदक से स्वयं संपर्क कर उनकी समस्याओं का निराकरण करें। उन्हें इस योजना के लिए बैंक से वित्तीय ऋ़ण उपलब्ध कराने में सहयोग करें। उन्होंने वेंडरों की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए ताकि प्रति सौ उपभोक्ताओं के बीच एक वेंडर हो। वेंडर से संपर्क स्थापित कर इस प्रक्रिया को 15 से 20 दिन में पूर्ण कराएं ताकि इस योजना के लक्ष्य को जल्द से जल्द प्राप्त कर लिया जाए। श्री देवांगन ने आरडीएसएस योजना के तहत प्रदेशभर में लगने वाले सभी स्मार्ट मीटर की प्रगति की जानकारी ली। अधिकारियों ने बताया कि स्मार्ट मीटर लगाने के लिए सभी प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है, वितरण ट्रांसफॉर्मर और फीडर में स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे हैं, इसके बाद घरेलू उपभोक्ताओं के घरों में स्मार्ट मीटर लगाए जाएंगे। श्री देवांगन ने कहा कि स्मार्ट मीटर से पीएम सूर्यघर योजना के लिए अलग से नेट मीटर लगाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। प्रदेश में ऐसी भूमि पर बड़े पैमाने में सोलर परियोजनाएं स्थापित की जाए जहाँ खेती नहीं होती है। वहीं पीएम सूर्यघर योजना के हितग्राहियों की संख्या बढ़ाने के लिए अधिक एजेंसियों द्वारा बड़े पैमाने पर कार्य किया जाए।

उन्होंने छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के लाइन लॉस एवं बकाया बिलों व लाभ की भी जानकारी ली। बैठक में आरईसी के प्रोजेक्ट हेड श्री प्रदीप फैलोस सहित पॉवर कंपनी के कार्यपालक निदेशक सर्वश्री भीम सिंह कंवर, आरए पाठक, वीके साय, आलोक सिंह, श्रीमती सरोज तिवारी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। योजनाओं का पॉवर पाइंट प्रस्तुतिकरण सीई श्री राजेन्द्र प्रसाद एवं एसई श्री एन बिम्बिसार ने किया। कार्यक्रम का संचालन अतिरिक्त महाप्रबंधक उमेश कुमार मिश्र ने किया।

कालड़ा बर्न एवं प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर
बनी रहे मुस्कान
कटे होंठ व तालु का नि:शुल्क ईलाज स्माइल ट्रेन के सौजन्य से
पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay Advt.

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता ONLYTDS.COM
ITR GST
G.S.T. रिटर्न Food Licence
इन्कम TAX फाईल M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस डिजिटल सिग्नेचर
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
9300755544, 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354